

जय नानेश  
Jay Naanesh

जय महावीर  
Jay Mahaaveer

जय रामेश  
Jay Raamesh

# प्रतिक्रमण सूत्र ( मूल )

## Pratikraman Sootra (Mool) (English Version)



**: Publisher :**  
Saadhumaargee Publication

पुस्तक : प्रतिक्रमण सूत्र

संस्करण : प्रथम-वर्ष 2017 (1000 प्रतियाँ)  
(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित)

रियायती मूल्य : रुपये 10/-

प्रकाशक : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर

पुस्तक प्राप्ति स्थान : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ  
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन  
पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर,  
बीकानेर-334401 (राज.)  
फोन: 0151-3292177, 2270261

: आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र  
राणा प्रतापनगर रोड, सुन्दरवास, उदयपुर (राज.)  
फोन: 0294-2490717, 2490306

## उच्चारण (Pronunciation)

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ  
a aa i ee u oo e ai o au

क ख ग घ च छ ज झ ट ठ  
ka kha ga gha cha chha ja jha ṭa ṭha

ड ढ ण त थ द ध न प फ  
ḍa ḍha ṇa ta tha da dha na pa pha

ब भ म य र ल व स ह क्ष ज्ञ  
ba bha ma ya ra la va sa ha ksha gya

क का कि की कु कू के कै को कौ  
ka kaa ki kee ku koo ke kai ko kau

**विशेष :** सुधी पाठकों से अनुरोध है कि प्रस्तुत संस्करण के सम्पादन/टंकण में किसी प्रकार की अशुद्धि अथवा कदाचित् सैद्धान्तिक त्रुटि हो गई हो तो आप उस जानकारी से **संयोजक** को सूचित करावें ताकि आगामी प्रकाशन में आवश्यक संशोधन किया जा सके।

## 1. इच्छामि णं भंते का पाठ ( प्रतिक्रमण-अनुज्ञा-सूत्र )

### 1. ICHCHHAAMI ṆAM BHANTE KAA PAATH (PRATIKRAMAṆ-ANUGYAA-SOOTRA)

इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए  
Ichchhaami ṇam bhante! tubbhehim abbhāṇuṇṇāe  
समाणे देवसियं\* पडिक्कमणं ठाएमि, देवसियं\*-  
samaaṇe devasiyaṃ\* paḍikkamaṇam ṭhaaemi, devasiyaṃ\*-  
णाण-दंसण-चरित्ताचरित्त-तव अइयार-  
ṇaṇa-dansaṇa-charittaacharitta-tava-aiyaara  
चिंतणत्थं करेमि काउस्सगं।  
chintāṇattham karemi kaaussaggam.

- 
- \* यहाँ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइयं', पाक्षिक प्रतिक्रमण में
  - \* Yahaa raatrik pratikramaṇ me 'raaiyam', paakshik pratikramaṇ me 'pakkhiyam', chaaturmaasik pratikramaṇ me 'chaaummaasiyam', सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरियं' शब्द बोलना saanvatsarik pratikramaṇ me 'sanvachchhariyam' shabd bolanaa चाहिये।  
chaahiye.
  - \* यहाँ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइयं', पाक्षिक प्रतिक्रमण
  - \* Yahaa raatrik pratikramaṇ me 'raaiyam', paakshik pratikramaṇ में 'पक्खियं', चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में 'चाउम्मासियं', me 'pakkhiya', chaaturmaasik pratikramaṇ me 'chaaummaasiya', सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरियं' शब्द बोलना चाहिये।  
saanvatsarik pratikramaṇ me 'sanvachchhariya' shabd bolanaa chaahiye.

## 2. इच्छामि ठाइउं का पाठ ( आत्म-विशुद्धि-सूत्र )

### 2. ICHCHHAAMI THAAIUM KAA PAATH (AATMA-VISHUDDHI-SOOTRA)

इच्छामि ठाइउं काउस्सगं जो मे देवसिओ\*  
Ichchhaami thaaium kaaussaggam jo me devasio\*  
अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मगो,  
aiyaaro kao, kaaio, vaaio, maanasio, ussutto, ummaggo,  
अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतित्तो, अणायारो,  
akappo, akaraṇijjo, dujjhaao, duvvichintio, aṇaayaaro,  
अणिच्छिअव्वो, असावगपाउगो, नाणे\* दंसणे,  
aṇichchhiavvo, asaavagapaauggo, naaṇe\* dansaṇe,

- 
- ❖ यहाँ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइओ', पाक्षिक प्रतिक्रमण में
  - ❖ Yahaa raatrik pratikramaṇ me 'raaio', paakshik pratikramaṇ me 'pakkhiyo', चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में 'चाउम्मासिओ', 'pakkhio', chaaturmaasik pratikramaṇ me 'chaaummaasio', सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरिओ' शब्द बोलना चाहिये।  
saanvatsarik pratikramaṇ me 'sanvachchhario' shabd bolanaa chaahiye.
  - \* हारिभद्रीयावश्यकवृत्ति, आवश्यकनिर्युक्ति,
  - \* Haaribhadreeyaavashyakavritti, aavashyakaniryukti, आवश्यकचूर्णि, आवश्यकवचूरि में 'तह' शब्द का उल्लेख aavashyakachoorṇi, aavashyakaavachoori me 'taha' shabd kaa ullekh नहीं है। अतः शुद्ध मूल पाठ का अनुसरण करते हुए  
nahee hai. Atah shuddh mool paath kaa anusaraṇ karate hue 'तह' शब्द इस पाठ में नहीं रखा गया है।  
'taha' shabd is paath me nahee rakhaa gayaa hai.

चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए\*, चउण्हं  
 charittaacharitte, sue, saamaaie\*, chaunḥam  
 कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं  
 kasaayaanam, panchaḥamanuvvayaanam, tiṇham  
 गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खाव्वयाणं,  
 guṇavvayaanam chaunḥam sikkhaavvayaanam,  
 बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडियं  
 baarasavihassa saavagadhammassa, jam khandiyam  
 जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 jam viraahiyam tassa michchaa mi dukkaḍam.

### 3. आगमे तिविहे सूत्र

( ज्ञान के अतिचारों का पाठ )

#### 3. AAGAME TIVIHE SOOTRA (GYAAN KE ATICHAARO KAA PAATH)

\* श्रीमत् स्थानांग सूत्र स्थान 3 उद्देशक 1 में तीन  
 \* Shreemat Sthaanaang sootra sthaan 3 uddeshak 1 me teen  
 गुप्ति संयत मनुष्यों की ही बताई है। अतः तीन गुप्ति  
 gupti sanyat manushyo kee hee bataaee hai. Atah teen gupti  
 सम्बन्धी प्रतिक्रमण श्रावकों के लिए अकर्तव्य होने से  
 sambandhee pratikramaṇ shraavako ke lie akartavya hone se  
 'तिण्हं गुत्तीणं' पाठ नहीं रखा गया है। सम्मेलन में  
 'tiṇham gutteenam' paaṭh nahee rakhaa gayaa hai. Sammelan me  
 विभिन्न संप्रदायों की पारस्परिक चर्चाओं के निष्कर्ष  
 vibhinn sampradaayo kee paarasparik charchaao ke nishkarsh  
 में भी 'तिण्हं गुत्तीणं' पाठ नहीं रखना, ऐसा उल्लेख है।  
 me bhee 'tiṇham gutteenam' paaṭh nahee rakhanaa, aisaa ullekh hai.

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा- सुत्तागमे  
 Aagame tivihe pannaṭte, tam jahaa- suttaagame  
 अत्थागमे तदुभयागमे इस तरह तीन प्रकार  
 atthaagame tadubhayaagame is tarah teen prakaar  
 आगमरूप ज्ञान के विषय में जो कोई अतिचार  
 aagamaroop gyaan ke vishay me jo koe atichaar  
 लगा हो, जं वाइद्धं, वच्चामेलियं,  
 lagaa ho, jam vaaidham, vachchaameliyam,  
 हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं,  
 heeṇakkharam, achchakkharam, payaheenam,  
 विणयहीणं, \*घोसहीणं, जोगहीणं,  
 viṇayaheenam, ghosaheenam, jogaheenam,  
 सुट्ठुदिण्णं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ  
 sutṭhuddiṇṇam dutṭhupadichchhiyam, akaale kao  
 सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, \*असज्झाइए  
 sajjhaao, kaale na kao sajjhaao, \*asajjhaae

❖ आवश्यक चूर्णि, हारिभद्रीयावश्यकवृत्ति आदि अनेक  
 ❖ Aavashyak choorni, Haaribhadreeyaavashyakavritti aadi anek  
 प्राचीन ग्रंथों में 'जोगहीणं, घोसहीणं' यह क्रम न  
 praacheen grantho me 'jogaheenam, ghosaheenam' yah kram na  
 होकर 'घोसहीणं, जोगहीणं' यह क्रम है एवं इन्हीं  
 hokar "ghosaheenam, jogaheenam" yah kram hai evam inhee  
 ग्रंथों में 'असज्झाए' के स्थान पर 'असज्झाइए' और 'सज्झाए' के  
 grantho me 'asajjhaae' ke sthaan par 'asajjhaae' aur 'sajjhaae' ke  
 स्थान पर 'सज्झाइए' पाठ है। अतः शुद्ध क्रम एवं पाठ के  
 sthaan par 'sajjhaae' paaṭh hai. Atah shuddh kram evam paaṭh ke  
 अनुसार यहाँ संशोधन किया गया है।  
 anusaar yahaa sanshodhan kiyaa gayaa hai.

सज्जाइयं, सज्जाइए न सज्जाइयं पढते-पढाते  
 sajjaaiyam, sajjaaiē na sajjaaiyam padhate-padhaate  
 विचारते ज्ञान और ज्ञानवंत पुरुषों की अविनय  
 vichaarate gyaan aur gyaanavant purusho kee avinay  
 आशातना की हो तो जो मे देवसिओ\* अइयारो कओ  
 aashaatanaa kee ho to jo me devasio\* aiyaaro kao  
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 tassa michchhaa mi dukkaḍam.

## 4. दर्शन सम्यक्त्व का पाठ ( सम्यक्त्व की शुद्धि का पाठ )

### 4. DARSHAN SAMYAKTVA KAA PAAṬH (SAMYAKTVA KEE SHUDDHI KAA PAAṬH)

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं\* सुसाहुणो गुरुणो।  
 Arihanto maha devo, jaavajjeevam\* susaahuṇo guruṇo.

\* यहाँ और आगे भी जहाँ-जहाँ, 'देवसिओ' शब्द है, वहाँ-वहाँ

\* Yahaa aur aage bhee jahaa-jahaa 'devasio' shabd hai, vahaa- vahaa  
 रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइओ' आदि पूर्वानुसार समझ लेना  
 raatrik pratikraman me 'raaio' aadi poorvaanusaar samajh lenaa  
 चाहिये।  
 chaahiye.

☆ आवश्यक सम्बन्धी प्राचीन ग्रंथों में 'जावज्जीवाए'

☆ Aavashyak sambandhee praacheen grantho me 'jaavajjeevaae'  
 के स्थान पर 'जावज्जीवं' शब्द है, 'जावज्जीवाए' शब्द  
 ke sthaan par 'jaavajjeevam' shabd hai, 'jaavajjeevaae' shabd  
 रखने से छंदोभंग होता है।  
 rakhane se chhandobhang hotaa hai.

जिणपणत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं माए गहियं ।।।।।  
 jinapanṇattam tattam, ia sammattam mae gahiyam ।।।।।  
 परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि।  
 Paramatthasanthavo vaa sudittṭhparamatthasevaṇaa vaavi.  
 वावण्णकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ।।2।।  
 vaavaṇṇakudansaṇavajjanaa, ya sammattasaddahaṇaa ।।2।।  
 इअ सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला  
 la sammattassa pancha aiyaaraa peyaalaa  
 जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा संका,  
 jaaniyavvaa na samaayariyavvaa tam jahaa sankaa,  
 कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडपसंसा,  
 kankhaa, vitigichchhaa, parapaasaṇḍapasansaa,  
 परपासंडसंथवो। इस प्रकार श्री समकित रत्न  
 parapaasaṇḍasanthavo. Is prakaar shree samakit ratn  
 पदार्थ के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तं जहा-  
 padaarth ke vishay me jo koe atichaar lagaa ho tam jahaa-  
 1. जिनवचन में शंका की हो,  
 1. Jinavachan me shankaa kee ho,  
 2. परदर्शन की आकांक्षा की हो,  
 2. Paradarshan kee aakaankshaa kee ho,  
 3. धर्म के फल में संदेह किया हो,  
 3. Dharm ke phal me sandeha kiya ho,  
 4. परपाखण्डी की प्रशंसा की हो,  
 4. Parapaakhandee kee prashansaa kee ho,  
 5. परपाखण्डी का परिचय किया हो।  
 5. Parapaakhandee kaa parichay kiya ho.

मेरे सम्यक्त्वरूप रत्न पर मिथ्यात्व रूपी रज-मैल  
 mere samyaktvaroop ratna par mithyaatva roopee raj-mail  
 लगा हो तो जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स  
 lagaa ho to jo me devasio aiyaaro kao tassa  
 मिच्छा मि दुक्कडं।  
 michchhaa mi dukkaḍam.

## 5. बारह व्रतो के अतिचार

### 5. BAARAH VRATO KE ATICHAAR

पहला स्थूल- प्राणातिपात-विरमण व्रत के

**Palalaa sthool** - praanaatipaata-viramaṇ vrat ke  
 विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तं जहां<sup>+</sup>-  
 vishay me jo koe atichaar lagaa ho tam jahaa<sup>+</sup>-

1. रोषवश गाढा बंधन बांधा हो,

✚ प्रतिक्रमण के पाठों के आरंभ में 'आलोड' शब्द का  
 ✚ Pratikraman ke paatho ke aarambh me 'aaloum' shabd kaa  
 कोई प्रयोजन नहीं है। पाठ के अंत में यथास्थान तस्स  
 koe prayojan nahee hai. Paath ke ant me yathaasthaan tassa  
 आलोड (प्रथम आवश्यक में कायोत्सर्ग में 99 अतिचारों का  
 aaloum (pratham aavashyak me kaayotsarg me 99 atichaaro kaa  
 चिंतन करते समय) और तस्स मिच्छा मि दुक्कडं दिया  
 chintan karate samay) aur tassa michchhaa mi dukkaḍam diyaa  
 जाता है। कायोत्सर्ग में 'तस्स आलोड' द्वारा दोषों की  
 jaataa hai. Kaayotsarg me 'tassa aaloum' dvaaraa dosho kee  
 आलोचना करने एवं चतुर्थ आवश्यक में दोषों का तस्स  
 aalochanaa karane evam chaturth aavashyak me dosho kaa tassa  
 मिच्छा मि दुक्कडं देते हुए प्रतिक्रमण पाठों के आरंभ  
 michchhaa mi dukkaḍam dete hue pratikraman paatho ke aarambh

1. Roshavash gaadhaa bandhan baandhaa ho,
  2. गाढा घाव घाला हो,
  2. Gaadhaa ghaav ghaalaa ho,
  3. अवयव (चमड़ी आदि) का छेद किया हो,
  3. Avayav (chamaḍee aadi) kaa chhed kiya ho,
  4. अधिक भार भरा हो,
  4. Adhik bhaar bharaa ho,
  5. आहार (भात-पानी) का विच्छेद किया हो,
  5. Aahaar (bhaat-paanee) kaa vichched kiya ho,
- इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो  
 in atichaaro me se mujhe koe atichaar lagaa ho to  
 दिवस संबंधी\* तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 divas sambandhee\* tassa michchhaa mi dukkaḍam.

में 'आलोड' बोलने का कोई प्रयोजन नहीं है। एतदर्थ आगमे  
 me 'aaloum' bolane kaa koe prayojan nahee hai. Etadarth aagame  
 तिविहे, 12 व्रतों के अतिचार और 18 पापस्थानों के पाठ आदि के  
 tivihe, 12 vrato ke atichaar aur 18 paapasthaano ke paath aadi ke  
 आरंभ में आने वाले 'आलोड' शब्द को निष्प्रयोजनता के  
 aarambh me aane vaale 'aaloum' shabd ko nishprayojanataa ke  
 कारण हटाया गया है।  
 kaaraṇ haṭaayaa gayaa hai.

✳ प्रतिदिन दिवस प्रतिक्रमण में दिवस सम्बन्धी, रात्रि के  
 ✳ Pratinidin divas pratikraman me divas sambandhee, raatri ke  
 प्रतिक्रमण में रात्रि सम्बन्धी, पाक्षिक प्रतिक्रमण में  
 pratikraman me raatri sambandhee, paakshik pratikraman me  
 पक्खी सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी  
 pakkhee sambandhee, chaumaasee pratikraman me chaumaasee  
 सम्बन्धी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवत्सरी  
 sambandhee aur sanvatsaree pratikraman me sanvatsaree

**दूजा स्थूल- मृषावाद-विरमण व्रत के विषय**

**Doojaa sthool** - mrishaavaad-viraman vrat ke vishay

में जो कोई अतिचार लगा हो तं जहां-

me jo koe atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. सहसाकार\* से किसी के प्रति कूड़ा आल ( झूठा दोष )

1. Sahasaakaar\* se kisee ke prati koodaa aal (jhoothaa dosh) diya ho,

diyaa ho,

2. एकांत में गुप्त बातचीत करते हुए व्यक्तियों पर

2. Ekaant me gupt baatacheet karate hue vyaktiyo par

झूठा आरोप लगाया हो,

jhoothaa aarop lagaayaa ho.

3. अपनी स्त्री+ के मर्म ( गुप्त बात ) प्रकाशित किये हों\*,

3. Apanee stree+ ke marm (gupt baat) prakaashit kiye ho\*,

सम्बन्धी बोलना चाहिये।

sambandhee bolanaa chaahiye.

★ सोचे समझे बिना की गई कोई भी प्रवृत्ति।

★ Soche samajhe binaa kee gaee koe bhee pravritti.

† स्त्री को 'अपने पुरुष' कहना चाहिये।

† Stree ko 'apane purush' kahanaa chaahiye.

★ मूल पाठ में 'सदारमंतभेए' पाठ के अनुसार यहाँ

★ Mool paath me 'sadaaramantabhee' paath ke anusaar yahaa apnee stree ke marm prakaashit kiye ho, ऐसा अर्थ किया है।

apnee stree ke marm prakaashit kiye ho, aisaa arth kiya hai.

उपलक्षण से किसी भी व्यक्ति के मर्म प्रकाशित करना

Upalakshan se kisee bhee vyakti ke marm prakaashit karanaa

अतिचार है, ऐसा समझा जा सकता है।

atichaar hai, aisaa samajhaa jaa sakataa hai.

4. मृषा ( झूठा ) उपदेश दिया हो,

4. Mrishaa (jhootha) upadesh diyaa ho,

5. झूठा लेख लिखा हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई

5. Jhoothaa lekh likhaa ho, in atichaaro me se mujhe koe

अतिचार लगा हो तो दिवस संबंधी

atichaar lagaa ho to divas sambandhee

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

tassa michchhaa mi dukkaadam.

**तीजा स्थूल- अदत्तादान-विरमण व्रत के विषय**

**Teejaa sthool** - adattaadaan-viraman vrat ke vishay

में जो कोई अतिचार लगा हो तं जहां-

me jo koe atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. चोर की चुराई हुई वस्तु ली हो,

1. Chor kee churaaee huee vastu lee ho,

2. चोर को सहायता दी हो,

2. Chor ko sahaayataa dee ho,

3. राज्यविरुद्ध काम किया हो,

3. Raajyaviruddh kaam kiya ho,

4. कूड़ा तोल कूड़ा माप किया हो,

4. Koodaa tol koodaa maap kiya ho,

5. वस्तु में भेल-सम्भेल की हो,

5. Vastu me bhel-sambhel kee ho,

इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो

in atichaaro me se mujhe koe atichaar lagaa ho

तो दिवस संबंधी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

to divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

चौथा स्वदार संतोष<sup>+</sup> परदार विवर्जनरूप स्थूल-  
**Chauthaa** svadaar santosh<sup>+</sup> paradaar vivarjanaroop sthool-  
 मैथुन विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार  
 maithun viramaṅ vrat ke vishay me jo koee atichaar  
 लगा हो तं जहा-  
 lagaa ho tam jahaa-

1. इत्तरियपरिगहिया\* से गमन किया हो,
1. Ittariyapariggahiyaa se gaman kiyaa ho,
2. अपरिगहिया से गमन किया हो,
2. Apariggahiyaa se gaman kiyaa ho,
3. अनंगक्रीड़ा की हो,
3. Anangakreedaa kee ho,
4. पराये का विवाह कराया हो,

† स्त्री को 'स्वपतिसंतोष पर-पुरुष-विवर्जन रूप' बोलना चाहिये।  
 † Stree ko 'svapatisantosh par-purush-vivarjan roop' bolanaa chaahiye.  
 \* अपरिगहिया-अपरिगृहिता के साथ गमन किया हो, ऐसा  
 \* Apariggahiyaa-aparigrihitaa ke saath gaman kiyaa ho, aisaa  
 पुरुष को बोलना चाहिये। स्त्री को इत्तरियपरिगहिय  
 purush ko bolanaa chaahiye. Stree ko ittariyapariggahiya  
 इत्तरपरिगृहित ( थोड़े काल के लिये पतिरूप से स्वीकार किया) और  
 itvaraparigrihit (thoḍe kaal ke liye patiroop se sveekaar kiyaa) aur  
 अपरिगहिय-अपरिगृहीत ( पतिरूप से स्वीकार नहीं किए हुए जा  
 apariggahiya-aparigriheet (patiroop se sveekaar nahee kie hue jaar  
 वगैरह) पुरुष से गमन किया हो, ऐसा बोलना चाहिये।  
 vagairah) purush se gaman kiyaa ho,aisaa bolanaa chaahiye.

4. Paraaye kaa vivaah karaayaa ho,
  5. कामभोग की तीव्र अभिलाषा की हो,
  5. Kaamabhog kee teevra abhilaashaa kee ho,
- इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो  
 in atichaar me se mujhe koee atichaar lagaa ho to  
 दिवस संबंधी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

चौथे स्थूल की टिप्पणी: जिन श्रावकों ने जीवन पर्यन्त  
**Chauthe sthool kee tippane:** Jin shraavako ne jeevan paryant  
 सम्पूर्ण मैथुन का परित्याग कर दिया है, उनका चौथा  
 sampoorṅ maithun kaa parityaag kar diyaa hai, unkaa chauthaa  
 व्रत 'स्वदारसंतोष परदार विवर्जन' न होकर 'सर्व मैथुन  
 vrat 'svadaarasantosh paradaar vivarjan' na hokar 'sarv maithun  
 विरमण' रूप होता है किन्तु पाठ में परिवर्तन करना शक्य  
 viramaṅ' roop hotaa hai kintu paath me parivartan karanaa shakya  
 नहीं है क्योंकि 'सर्व मैथुन विरमण' की प्रतिज्ञा वाले  
 nahee hai kyonki 'sarv maithun viramaṅ' kee pratigyaa vaale  
 श्रावक को 'स्वस्त्रीगमन' को पाँच अतिचारों में नहीं लिया  
 shraavak ko 'svastreegaman' ko paanch atichaar me nahee liyaa  
 गया है अतः उसके लिए अतिचार पाठ में भी भिन्नता आएगी।  
 gayaa hai atah usake lie atichaar paath me bhee bhinnataaa aegee.  
 यद्यपि प्रतिक्रमण सूत्र में आगार धर्म के व्रतों एवं  
 Yaddhapi pratikramaṅ sootra me aagaar dharm ke vrato evam  
 अतिचारों सम्बन्धी समुच्चय पाठ गृहीत है। तथापि  
 atichaar sambandhee samuchchay paath griheet hai. Tathaapi  
 प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिज्ञाओं में होने वाली न्यूनाधिकताओं का  
 pratyek vyakti kee pratigyaa me hone vaalee nyoonaadhikataao kaa  
 समावेश प्रतिक्रमण सूत्र में संभव नहीं है।  
 samaavesh pratikramaṅ sootra me sambhav nahee hai.



divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

पाँचवां स्थूल- परिग्रह-विरमण ( परिग्रहपरिमाण )

**Paanchavaa sthool-** parigrah-viramaṇ (parigrahaparimaṇ)

व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तं जहा-

vrat ke vishay me jo koee atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. खेत<sup>०</sup>-वत्थु<sup>♦</sup> का परिमाण अतिक्रमण ( उल्लंघन ) किया हो,

1. Khet<sup>०</sup>-vatthu<sup>♦</sup> kaa parimaṇ atikramaṇ (ullanghan) kiyaa ho,

2. हिरण्य-सुवर्ण का परिमाण अतिक्रमण किया हो,

2. Hiranya-suvarṇ kaa parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho,

3. धन-धान्य का परिमाण अतिक्रमण किया हो,

3. Dhan-dhaanya kaa parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho,

4. दोपद-चौपद का परिमाण अतिक्रमण किया हो,

4. Dopad-chaupad kaa parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho,

5. कुप्य ( कांसी, पीतल, तांबा, लोहा आदि धातु

5. Kupya (kaansee, peetal, taambaa, lohaa aadi dhaatu

का तथा इनसे बने हुए बर्तन आदि और शय्या,

kaa tathaa inase bane hue bartan aadi aur shayyaa,

आसन, वस्त्र आदि घर संबंधी वस्तुओं ) का

aasan, vastra aadi ghar sambandhee vastuo) kaa

परिमाण अतिक्रमण किया हो, इन अतिचारों में से

parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho, in atichaaro me se

⊗ खुली जमीन।

⊗ Khulee jameen.

◆ निर्मित मकान, दुकान आदि।

◆ Nirmit makaan, dukaan aadi.

मुझे कोई अतिचार लगा हो तो दिवस संबंधी

mujhe koee atichaar lagaa ho to divas sambandhee

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

tassa michchhaa mi dukkaḍam.

छठे दिशाव्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा

**Chhathe dishaavrat** ke vishay me jo koee atichaar lagaa

हो तं जहा-

ho tam jahaa-

1. ऊँची दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो,

1. Oonchee dishaa kaa parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho,

2. नीची दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो,

2. Neechee dishaa kaa parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho,

3. तिरछी दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो,

3. Tirachhee dishaa kaa parimaṇ atikramaṇ kiyaa ho,

4. क्षेत्र बढ़ाया हो,

4. Kshetra badhaayaa ho,

5. क्षेत्र का परिमाण भूल जाने से पंथ का संदेह

5. Kshetra kaa parimaṇ bhool jaane se panth kaa sandeh

पड़ने पर आगे चला हो तो इन अतिचारों में से मुझे

paḍane par aage chala ho to in atichaaro me se mujhe

कोई अतिचार लगा हो तो दिवस संबंधी तस्स

koee atichaar lagaa ho to divas sambandhee tassa

मिच्छा मि दुक्कडं।

michchhaa mi dukkaḍam.

सातवां उपभोगपरिभोग- परिमाण व्रत के विषय

**Saatavaa upabhogaparibhog-** parimaan vrat ke vishay  
में जो कोई अतिचार लगा हो तं जहा-

me jo koe atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. पचचक्खाण उपरान्त सचित्त का आहार किया हो,
  1. Pachchakhaan uparaant sachitt kaa aahaar kiya ho,
  2. सचित्त प्रतिबद्ध का आहार किया हो,
  2. Sachitt pratibaddh kaa aahaar kiya ho,
  3. अपक्व का आहार किया हो,
  3. Apakva kaa aahaar kiya ho,
  4. दुष्पक्व का आहार किया हो,
  4. Dushpakva kaa aahaar kiya ho,
  5. तुच्छौषधि\* का आहार किया हो,
  5. Tuchchhaushadhi\* kaa aahaar kiya ho,
- इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो दिवस  
in atichaaro me se mujhe koe atichaar lagaa ho to divas  
संबंधी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
sambandhee tassa michchhaa mi dukkadam

\* जिसमें खाने योग्य अंश तो थोड़ा हो और अधिक फेंकना

\* Jisame khaane yogya ansh to thoḍaa ho aur adhik phenkanaa  
पड़े, उसे तुच्छौषधि कहते हैं, जैसे- मूंग की कच्ची  
paḍe, use tuchchhaushadhi kahate hai, jaise- moong kee kachchee  
फली, सीताफल, गन्ना (गंडेरी) आदि।  
phalee, seetaaphal, gannaa (ganderee) aadi.

पन्द्रह कर्मादान\* संबंधी जो कोई अतिचार

Pandrah karmaadaan\* sambandhee jo koe atichaar  
लगा हो, तं जहा- 1. इंगालकम्मे, 2. वणकम्मे,

lagaa ho, tam jahaa- 1. Ingaalakamme, 2. vaṇakamme,  
3. साडीकम्मे, 4. भाडीकम्मे, 5. फोडीकम्मे,

3. saadeekamme, 4. bhaadeekamme, 5. phodeekamme,

6. दन्तवाणिज्जे, 7. लक्खवाणिज्जे 8. रसवाणिज्जे,

6. dantavaanijje, 7. lakkhavaanijje, 8. rasavaanijje,

9. केसवाणिज्जे, 10. विसवाणिज्जे, 11. जंतपीलणकम्मे,

9. kesavaanijje, 10. visavaanijje, 11. jantapeelanakamme,

12. निलंछणकम्मे, 13. दवग्गिदावणया,

12. nilanchhanakamme, 13. davaggidaavanayaa

14. \*सर-दह-तलाय परि-सोसणया,

14. \*sar-dah-talaay pari-sosanayaa,

☆ अधिक हिंसा वाले धन्धों से आजीविका चलाना

☆ Adhik hinsaa vaale dhandho se aajeevikaa chalaanaa

कर्मादान है अथवा जिन धन्धों से उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय

karmaadaan hai athavaa jin dhandho se utkrishṭ gyaanaavaraneeya

आदि कर्मों का बन्ध होता है उन्हें कर्मादान कहते हैं।

aadi karmo kaa bandh hotaa hai unhe karmaadaan kahate hai.

ये श्रावक के जानने योग्य हैं किन्तु आचरण करने

Ye shraavak ke jaanane yogya hai kintu aacharan karane

योग्य नहीं हैं।

yogya nahee hai.

❖ श्रीमद् भगवती सूत्र, हारिभद्रीयावश्यक-वृत्ति,

❖ Shreemad Bhagavatee sootra, Haaribhadreeyaavashyak-vritti,

हस्तलिखित आवश्यकावचूरि में 'परिसोसणया' पाठ है।

hastalikhita avashyakaavachoori me 'parisosanayaa' paath hai.

15. \*असई-पोसणया

15. \*asaee-posaṇayaa

इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो  
in atichaaro me se mujhe koee atichaar lagaa ho to  
दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

आठवें अनर्थदंड- विरमण व्रत के विषय में जो  
**Aathave anarthadand-** viramaṇ vrat ke vishay me jo  
कोई अतिचार लगा हो तं जहा-

koee atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. कामविकार पैदा करने वाली कथा की हो,
1. Kaamavikaar paidaa karane vaalee kathaa kee ho,
2. भंड-कुचेष्टा की हो,
2. Bhand-kucheshṭaa kee ho,
3. मुखरी वचन बोला हो,
3. Mukharee vachan bolaa ho,
4. अधिकरण यानी हिंसाकारी उपकरणों का संग्रह किया हो,
4. Adhikaraṇ yaanee hinsaakaaree upakaraṇo kaa sangraha kiyaa ho,

\* श्रीमद् भगवती सूत्र आदि उपर्युक्त ग्रंथों एवं

\* Shreemad Bhagavatee sootra aadi uparyukt grantho evam  
आवश्यक निर्युक्ति, दीपिका, आवश्यकचूर्णि में असईजण-  
aavashyak niryukti, deepikaa, aavashyakachoorṇi me asaeejana-  
पोसणया पाठ न होकर असई-पोसणया पाठ है।  
posaṇayaa paath na hokar asaee-posaṇayaa paath hai.

5. उपभोग-परिभोग अधिक बढ़ाया हो,

5. Upabhog- paribhog adhik badhaayaa ho,  
इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो  
in atichaaro me se mujhe koee atichaar lagaa ho to  
दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

नवें सामायिक व्रत के विषय में से जो कोई अतिचार  
**Nave saamaayik vrat** ke vishay me se jo koee atichaar  
लगा हो तं जहा-  
lagaa ho tam jahaa-

- 1-3. मन, वचन और काया के अशुभ योग प्रवर्ताये हों,
  - 1-3. Man, Vachan aur Kaayaa ke ashubh yog pravartaaye ho,
  4. सामायिक की स्मृति न रखी हो,
  4. Saamaayik kee smriti na rakhee ho,
  5. समय पूर्ण हुए बिना सामायिक पारी हो,
  5. Samay poorn hue binaa saamaayik paaree ho,
- इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो  
in atichaaro me se mujhe koee atichaar lagaa ho  
तो दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
to divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

दसवें देशावकाशिक व्रत के विषय में जो कोई

**Dasave deshaavakaashik vrat** ke vishay me jo koee  
अतिचार लगा हो तं जहा-  
atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. नियमित सीमा के बाहर की वस्तु मंगवाई हो,  
1. Niyamit seemaa ke baahar kee vastu mangavaaaee ho,
2. भिजवाई हो,  
2. Bhijavaaaee ho,
3. शब्द करके चेतया हो,  
3. Shabd karake chetaayaa ho,
4. रूप दिखा करके अपने भाव प्रकट किये हों,  
4. Roop dikhaa karake apane bhaav prakat kiye ho,
5. कंकर आदि फेंक कर दूसरे को बुलाया हो,  
5. Kankar aadi phenk kar doosare ko bulaayaa ho,  
इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो  
in atichaaro me se mujhe koee atichaar lagaa ho to  
दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

ग्यारहवें प्रतिपूर्ण- पौषध व्रत के विषय में

**Gyaarahave pratipoorn** - paushadh vrat ke vishay me  
जो कोई अतिचार लगा हो तं जहा-

jo koee atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. पौषध में शय्यासंधारा न देखा हो या  
1. Paushadh me shayyaasantharaa na dekhaa ho yaa  
अच्छी तरह से न देखा हो,  
achchhee tarah se na dekhaa ho,
2. प्रमार्जन न किया हो या अच्छी तरह से न किया हो,  
2. Pramaarjan na kiyaa ho yaa achchhee tarah se na kiyaa ho,
3. उच्चारपासवण की भूमि को देखी न हो

3. Uchhaarapaasavaṇ ki bhoomi ko dekhee na ho  
अथवा अच्छी तरह से न देखी हो,  
athavaa achchhee tarah se na dekhee ho,
4. पूंजी न हो या अच्छी तरह से न पूंजी हो,  
4. Poonjee na ho yaa achchhee tarah se na poonjee ho,
5. उपवासयुक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन  
5. Upavaasayukt paushadh kaa samyak prakaar se paalan  
न किया हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा  
na kiyaa ho, in atichaaro me se mujhe koee atichaar lagaa  
हो तो दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
ho to divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

बारहवें अतिथि संविभाग व्रत के विषय में जो

**Baarahave atithi samvibhaag vrat** ke vishay me jo  
कोई अतिचार लगा हो तं जहा-

koee atichaar lagaa ho tam jahaa-

1. अचित्त वस्तु सचित्त पर रखी हो,  
1. Achitt vastu sachitt par rakhee ho,
2. अचित्त वस्तु सचित्त से ढांकी हो,  
2. Achitt vastu sachitt se dhaankee ho,
3. साधुओं को भिक्षा देने के समय को टाल दिया हो,  
3. Saadhuo ko bhikshaa dene ke samay ko taal diyaa ho,
4. दान नहीं देने की बुद्धि से अपनी वस्तु दूसरे  
4. Daan nahee dene kee buddhi se apanee vastu doosare  
की कही हो,  
kee kahee ho,

5. ईर्ष्या भाव से दान दिया हो,  
 5. Eershyaa bhaav se daan diyaa ho,  
 इन अतिचारों में से मुझे कोई अतिचार लगा हो तो  
 in atichaaro me se mujhe koe atichaar lagaa ho to  
 दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.

## 6. संलेखना के पाँच अतिचारों का पाठ 6. SANLEKHANAA KE PAANCH ATICHAARO KAA PAATH

अपच्छिम मारणांतिय संलेहणा झूसणा  
 Apachchhim maaraṇantiya sanlehaṇaa jhoosaṇaa  
 आराहणाए पंच अइयारा जाणियव्वा न  
 aaraahaṇaae panch aiyaaraa jaṇiyavvaa na  
 समायरियव्वा तं जहा- इहलोगासंसप्पओगे,  
 samaayariyavvaa tam jahaa- ihalogaasansappaoge,  
 परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे,  
 paralogaasansappaoge, jeeviyaasansappaoge,  
 मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे  
 maraṇaasansappaoge, kaamabhogaasansappaoge  
 जो में देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 jo me devasio aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

## 7. अठारह पापस्थान का पाठ

### 7. AṬHAARAH PAAPASTHAAN KAA PAATH

अठारह पापस्थान- 1. प्राणातिपात, 2. मृषावाद,  
 Aṭhaarah paapasthaan-1. praanaatipaata, 2. mrishaavaada,  
 3. अदत्तादान, 4. मैथुन, 5. परिग्रह, 6. क्रोध, 7. मान,  
 3. adattaadaan, 4. maithun, 5. parigraha, 6. krodha, 7. maana,  
 8. माया, 9. लोभ, 10. राग, 11. द्वेष, 12. कलह,  
 8. maayaa, 9. lobha, 10. raaga, 11. dvesha, 12. kalah,  
 13. अभ्याख्यान, 14. पैशुन्य, 15. परपरिवाद,  
 13. abhyaakhyaana, 14. paishunya, 15. paraparivaada,  
 16. रति-अरति, 17. माया-मृषावाद,  
 16. rati-arati, 17. maayaa- mrishaavaada,  
 18. मिथ्यादर्शनशल्य-  
 18. mithyaadarshanashalya-  
 इन अठारह पापस्थानों में से किसी का सेवन  
 in aṭhaarah paapasthaano me se kisee kaa sevan  
 किया हो, सेवन कराया हो और सेवन करते हुए  
 kiyaa ho, sevan karaayaa ho aur sevan karate hue  
 को भला जाना हो तो अनन्त सिद्ध केवली  
 ko bhala jaana ho to anant siddh kevalee  
 भगवान की साक्षी से दिवस सम्बन्धी  
 bhagavaan kee saakshee se divas sambandhee  
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 tassa michchhaa mi dukkaḍam.

## 8. इच्छामि खमासमणो का पाठ

### 8. ICHCHHAAMI KHAMAASAMAṆO KAAPAAṬH

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

Ichchhaami khamaasamaṇo vandium jaavanijjaae  
 निसीहियाए अणुजाणह में मिउग्गहं निसीहि अहोकायं  
 niseehiyaae anujaanah me miuggaham niseehi ahokaayam  
 कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं  
 kaayasamphaasam khamanijjo bhe kilaamo appakilantaṇam  
 बहुसुभेणं भे दिवसो वइक्कंतो<sup>1</sup> जत्ता भे  
 bahusubhenam bhe divaso vaikkanto<sup>1</sup> jattaa bhe  
 जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो! देवसिअं  
 javanijjam cha bhe khaamemi khamaasamaṇo! devasiam  
 वइक्कमं<sup>2</sup> आवस्सियाए पडिक्कमामि।  
 vaikkamam<sup>2</sup> aavassiyaae paḍikkamaami.  
 खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए<sup>3</sup>  
 khamaasamaṇaṇam devasiaae aasaayaṇaae<sup>3</sup>  
 तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए  
 titteesannayaraae jam kinchi michchhaae maṇadukkaḍaae  
 वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए  
 vayadukkaḍaae kaayadukkaḍaae kohaae maṇaae  
 मायाए लोहाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए  
 maayaae lohaae savvakaaliaae savvamichchhovayaaraae  
 सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ  
 savvadhammaikkamaṇaae aasaayaṇaae jo me devasio  
 अइयारो<sup>4</sup> कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि

aiyaaro<sup>4</sup> kao, tassa khamaasamaṇo! paḍikkamaami  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।  
 nindaami garihaami appaṇam vosiraami.

नोट- रात्रिक प्रतिक्रमण में- “दिवसो वइक्कंतो” के स्थान पर

**Note- Raatrik pratikramaṇ me-** "divaso vaikkanto" ke sthaan par  
 “राई वइक्कंतो” “देवसियं वइक्कमं” के स्थान पर  
 "raaee vaikkanto" "devasiyam vaikkamam" ke sthaan par  
 “राइयं वइक्कमं” “देवसियाए आसायणाए” के स्थान पर  
 "raaiyam vaikkamam" "devasiyaae aasaayaṇaae" ke sthaan par  
 “राइयाए आसायणाए” “देवसिओ अइयारो” के स्थान पर  
 "raaiyaae aasaayaṇaae" "devasio aiyaaro" ke sthaan par  
 “राइओ अइयारो”। **पाक्षिक प्रतिक्रमण में** “दिवसो वइक्कंतो”  
 "raaio aiyaaro"। **Paakshik pratikramaṇ me** "divaso vaikkanto"  
 के स्थान पर “पक्खो वइक्कंतो” “देवसियं वइक्कमं”  
 ke sthaan par "pakkho vaikkanto" "devasiyam vaikkamam"  
 के स्थान पर “पक्खियं वइक्कमं” “देवसियाए आसायणाए”  
 ke sthaan par "pakkhiyam vaikkamam" "devasiyaae aasaayaṇaae"  
 के स्थान पर “पक्खियाए आसायणाए” “देवसिओ अइयारो” के  
 ke sthaan par "pakkhiyaae aasaayaṇaae" "devasio aiyaaro" ke  
 स्थान पर “पक्खिओ अइयारो” **चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में**  
 sthaan par "pakkhio aiyaaro"। **Chaaturmaasik pratikramaṇ me**  
 “दिवसो वइक्कंतो” के स्थान पर “चाउम्मासो वइक्कंतो”  
 "divaso vaikkanto" ke sthaan par "chaammaaso vaikkanto"  
 “देवसियं वइक्कमं” के स्थान पर “चाउम्मासियं वइक्कमं”  
 "devasiyam vaikkamam" ke sthaan par "chaammaasiyam vaikkamam"  
 “देवसियाए आसायणाए” के स्थान पर “चाउम्मासियाए  
 "devasiyaae aasaayaṇaae" ke sthaan par "chaammaasiyaae  
 आसायणाए” “देवसिओ अइयारो” के स्थान पर “चाउम्मासिओ

## 9. समुच्चय पाठ

### 9. SAMUCHCHAY PAATH

इस प्रकार 14 ज्ञान के, 5 दर्शन (सम्यक्त्व) के, Is prakaar 14 gyaan ke, 5 darshan (samyaktva) ke, 60 बारह व्रतों के, 15 कर्मादान के, 5 संलेखना के- 60 baarah vrato ke, 15 karmaadaan ke, 5 sanlekhanaa ke- इन 99 अतिचारों में से किसी भी अतिचार का in 99 atichaaro me se kisee bhe atichaar kaa जानते-अजानते मन, वचन, काया से सेवन किया हो, jaanate-ajaanate man, vachan, kaayaa se sevan kiyaa ho, काराया हो, करते को भला जाना हो तो अनन्त सिद्ध karaayaa ho, karate ko bhala jaanaa ho to anant siddh केवली भगवान की साक्षी से दिवस सम्बन्धी kevalee bhagavaan ke saakshee se divas sambandhee

aasaayanāae<sup>3</sup>"devasio aiyaaro" ke sthaan par "chaaummaasio अइयारो<sup>4</sup>" एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण में "दिवसो वइक्कंतो" के aiyaaro<sup>4</sup>" evam Sanvatsaree pratikramaṇ me "divaso vaikkanto" ke स्थान पर "संवच्छरो वइक्कंतो" "देवसियं वइक्कमं" sthaan par "sanvachchharo vaikkanto" "devasiyam vaikkamam" के स्थान पर "संवच्छरियं वइक्कमं" ke sthaan par "sanvachchhariyam vaikkamam<sup>2</sup>" "देवसियाए आसायणाए" के स्थान पर "संवच्छरियाए "devasiyaae aasaayanāae" ke sthaan par "sanvachchhariyaae आसायणाए" "देवसिओ अइयारो" के स्थान पर aasaayanāae<sup>3</sup>"devasio aiyaaro" ke sthaan par "संवच्छरिओ अइयारो" पाठ बोलना चाहिये। "sanvachchharo aiyaaro<sup>4</sup>" paath bolanaa chaahiye.

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

tassa michchhaa mi dukkaḍam.

## 10. तस्स सव्वस्स का पाठ

### 10. TASSA SAVVASSA KAA PAATH

तस्स सव्वस्स देवसियस्स\* अइयारस्स दुब्भासिय Tassa savvassa devasiyassa\* aiyaarassa dubbhaasiya दुच्चिंतिय दुच्चिट्ठयस्स आलयन्तो पडिक्कमामि। duchchintiya duchchittiyassa aaloyanto padikkamaami.

## 11. चत्तारि मंगलं का पाठ

### 11. CHATTAARI MANGALAM KAA PAATH

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा Chattaari mangalam, arihantaa mangalam, siddhaa मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो mangalam, saahoo mangalam, kevalipannatto dhammo मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, mangalam. Chattaari loguttamaa, arihantaa loguttamaa, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो

\* यहाँ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'रइयस्स', पाक्षिक प्रतिक्रमण में

\* Yahaa raatrik pratikramaṇ me 'raaiyassa', paakshik pratikramaṇ me 'pakkhiyassa', chaaturmaasik pratikramaṇ me 'chaumaasiyassa', संवत्सरी प्रतिक्रमण में 'संवच्छरियस्स' पाठ बोलना चाहिए। sanvatsaree pratikramaṇ me 'sanvachchhariyass' paath bolanaa chaahiye.



siddhaa loguttamaa, saahoo loguttamaa, kevalipannaatto  
 धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि,  
 dhammo loguttamo. Chattaari saraṇam pavajjaami,  
 अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं  
 arihante saraṇam pavajjaami, siddhe saraṇam  
 पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,  
 pavajjaami, saahoo saraṇam pavajjaami,  
 केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।  
 kevalipannattam dhammam saraṇam pavajjaami.  
 अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं  
 Arihanto kaa sharaṇaa, siddho kaa sharaṇaa, saadhuo  
 का शरणा, केवली-प्ररूपित धर्म का शरणा।  
 kaa sharaṇaa, kevalee-praroopit dharm kaa sharaṇaa.  
 चार शरणा, दुख हरणा और न शरणा कोय।  
 Chaar sharaṇaa, dukh haraṇaa aur na sharaṇaa koy.  
 जो भवि प्राणी आदरे, अक्षय अमर पद होय।।  
 Jo bhavi praanee aadare, akshay amar pad hoy.

## 12. दंसण समकित का पाठ

### 12. DANSANA SAMAKITA KAA PAATH

दंसणसम्मत्त-परमत्थसंथवो वा,  
 Dansanasammatta-paramatthasanthavo vaa,  
 सुदिट्ठपरमत्थ-सेवणा वावि  
 suditthaparamattha-sevanaa vaavi  
 वावण्णकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्त-सद्दहणा।  
 vaavannaakudansanavajjanaa, ya sammatta-saddahanaa.

एवं समणोवासएणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा  
 Evam samanovasaenaṇam sammattassa panch aiyaraa  
 पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा-  
 peyaalaa jaaniyavvaa na samaayariyavvaa, tam jahaa-  
 संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडपसंसा  
 sankaa, kankhaa, vitigichchhaa, parapaasandapasansaa  
 परपासंडसंथवो, जो में देवसिओ अइयारो कओ  
 parapaasandasanthavo, jo me devasio aiyaro kao  
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 tassa michchhaa mi dukkaḍam.

## 13. बारह व्रतों के अतिचार सहित पाठ

### 13. BAARAH VRATO KE ATICHAAR SAHIT PAATH

पहला अणुव्रत थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं-  
 Pahalaa anuvrat thoolao paanaaivaayaao veramaṇam-  
 त्रस जीव बेइंदिय, तेइंदिय, चउरिंदिय, पंचिंदिय  
 tras jeev beindiya, teindiya, chaurindiya, panchindiya  
 जान के पहिचान के संकल्प करके उसमें स्वसंबंधी  
 jaan ke pahichaan ke sankalp karake usame svasambandhee  
 शरीर के भीतर में पीड़ाकारी, सापराधी को  
 shareer ke bheetar me peeḍaakaaree, saaparaadhee ko  
 छोड़ निरपराधी को आकुट्टी (हनने) की बुद्धि  
 chhod niraparaadhee ko aakuttee (hanane) kee buddhi  
 से हनने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं  
 se hanane kaa pachchakkhanaa jaavajjeevaae duviam



तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा,  
 tivihenam na karemi na kaaravemi, manasaa, vayasaa,  
 कायसा ऐसे पहले स्थूल- प्राणातिपात विरमण  
 kaayasaa aise pahale sthool- praanaatipaata viraman  
 व्रत के पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न  
 vrat ke panch aiyaaraa peyaalaa jaaniyavvaa na  
 समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-बंधे, वहे,  
 samaayariyavvaa tam jahaa te aaloum- bandhe, vahe,  
 छविच्छेए, अइभारे, भत्तपाणवोच्छेए\* जो  
 chhavichchhee, aibhaare, bhattapaanavochchhee\* jo  
 मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 me devasio aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkadam.

दूजा अणुव्रत थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं-  
**Dooja anuvrat thoolao musaavaayaao veramanam-**  
 कन्नालीए, गवालीए\*, भोमालीए, णासावहारो  
 kannalee, gavaalee\*, bhomaalee, naasaavahaaro

\* "विच्छेए" पाठ अशुद्ध होने के कारण "वोच्छेए" किया

\* "Vichchhee" paath ashuddh hone ke kaaran "vochchhee" kiyaa  
 गया है।

gayaa hai.

❖ हारिभद्रीयावश्यकवृत्ति, आवश्यक चूर्णि आदि आवश्यक

❖ Haaribhadreeyaavashyakavritti, aavashyak choorni aadi aavashyak  
 सम्बन्धी प्राचीन ग्रंथों के अनुसार 'गोवालीए' शुद्ध  
 sambandhee praacheen grantho ke aunsaar 'govaalee' shuddh  
 न होकर 'गवालीए' पाठ शुद्ध है।

na hokar 'gavaalee' paath suddh hai.

( थापण मोसो ) कूडसक्खिजे ( कूड़ी साख )  
 (thaapan moso) koodasakkhije (kooḍee saakh)  
 इत्यादिक मोटा झूठ बोलने का पच्चक्खाण  
 ityaadik motaa jhooth bolane kaa pachchakhaan  
 जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि,  
 jaavajjeevaae duvigham tivihenam na karemi, na kaaravemi,  
 मणसा, वयसा, कायसा एवं दूजा स्थूल  
 manasaa vayasaa, kaayasaa evam doojaa sthool  
 मृषावाद विरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा  
 mrishaavaad viraman vrat ke panch aiyaaraa jaaniyavvaa  
 न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-  
 na samaayariyavvaa, tam jahaa te aaloum-  
 सहसब्भक्खाणे, रहस्सब्भक्खाणे,  
 sahasabbhakkhaane, rahassabbhakkhaane,  
 सदारमन्तभेए\*, मोसोवएसे कूडलेहकरणे  
 sadaaramantabhee\*, mosovaese koodalehakarane  
 जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 jo me devasio aiyaaro kao tassa michchha mi dukkadam.

तीजा अणुव्रत थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं-  
**Teejaa anuvrat thoolao adinnaadaanaao veramanam-**  
 खात खनकर, गांठ खोलकर, ताले पर कूची

\* श्राविकाएँ 'सदारमन्तभेए' के स्थान पर 'सभत्तार

\* Shraavikaae 'sadaaramantabhee' ke sthaan par 'sabhattaar  
 मन्तभेए' बोलें।

mantabhee' bole.

khaat khanakar, gaanṭh kholakar, taale par koonchee  
 लगाकर, मार्ग में चलते को लूटकर, पड़ी हुई  
 lagaakar, maarg me chalate ko lootakar, paḍee huee  
 धणियाती मोटी वस्तु जानकर लेना इत्यादि मोटा  
 dhanīyaatee moṭee vastu jaanakar lenaa ityaadi moṭaa  
 अदत्तादान का पच्चक्खाण, सगे सम्बन्धी,  
 adattaadaan kaa pachchakhaan, sage sambandhee,  
 व्यापार सम्बन्धी तथा पड़ी निर्भ्रमी  
 vyaapaar sambandhee tathaa paḍee nirbhramee  
 वस्तु के उपरान्त अदत्तादान का पच्चक्खाण  
 vastu ke uparaant adattaadaan kaa pachchakhaan  
 जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं- न करेमि, न  
 jaavajjeevaae duviham tivihenam- na karemi, na  
 कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा ऐसे तीजा  
 kaaravemi, manasaa, vayasaa, kaayasaa aise teejaa  
 स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत के पंच अइयारा  
 sthool adattaadaan viraman vrat ke panch aiyaaraa  
 जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-  
 jaaniyavvaa na samaayariyavvaa tam jahaa te aaloum-  
 तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे,  
 tenaahade, takkarappaoge, viruddharajjaikkame,  
 \*कूडतुलकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे जो  
 \*koodatulukoodamaane, tappadiroovagavavahaare jo

---

\* आवश्यक चूर्णि आदि प्राचीन ग्रंथों के अनुसार  
 \* Aavashyak choorni aadi praacheen grantho ke anusaar  
 'तुल्ल' शब्द न होकर 'तुल' शब्द है।  
 'tull' shabd na hokar 'tul' shabd hai.

मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 me devasio aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

चौथा अणुव्रत थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं-

**Chauthaa anuvrat thoolaaO mehunaao veramanam-**  
 सदारसंतोसिए\* अवसेसमेहुणविहिं पच्चक्खामि  
 sadaarasantosie\* avasesamehunaavhim pachchakhaami  
 जावज्जीवाए देव-देवी सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं-  
 jaavajjeevaae dev-devee sambandhee duviham tivihenam-  
 न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा  
 na karemi, na kaaravemi, manasaa, vayasaa, kaayasaa  
 तथा मनुष्य तिर्यञ्च सम्बन्धी एगविहं  
 tathaa manushya tiryanch sambandhee egaviham  
 एगविहेणं- न करेमि कायसा ऐसे चौथा  
 egavihenam- na karemi kaayasaa aise chauthaa  
 स्वदार-संतोष\* परदार-विवर्जन रूप स्थूल मैथुन  
 svadaar-santosh\* paradaar-vivarjan roop sthool maithun  
 विरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न  
 viraman vrat ke panch aiyaaraa jaaniyavvaa na

◆ श्राविकाओं को 'सदारसंतोसिए' के स्थान पर 'सभत्तार

◆ Shraavikao ko 'sadaarasantosie' ke sthaan par 'sabhattaar  
 संतोसिए' बोलना चाहिए।

santosie' bolanaa चाहिए।

\* 'स्वदार संतोष-परदार विवर्जन' ऐसा पुरुष को बोलना चाहिये

\* 'Svadaar santosh-paradaar vivarjan' aisaa purush ko bolanaa chaahiye  
 और स्त्री को 'स्वपति संतोष-परपुरुष विवर्जन' ऐसा बोलना चाहिए।  
 aur stree ko 'svapati santosh-parapurush vivarjan' aisaa bolanaa chaahie.

समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-  
 samaayariyavvaa tam jahaa te aaloum-  
 ०इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे,  
 ०ittariyapariggahiyaagamane, apariggahiyaagamane,  
 अनंगकीडा, परविवाहकरणे,  
 anangakeeda, paravivaahakarane,  
 कामभोगातिव्वाभिलासे जो में देवसिओ अइयारो  
 kaamabhogaativvaabhilaase jo me devasio aiyaaro  
 कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

पाँचवां अणुव्रत थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं-  
**Paanchavaa anuvrat thoolao pariggahaao veramaṇam-**  
 खेत्तवत्थु का यथापरिणाम, हिरण्ण-सुवण्ण  
 khettavattu kaa yathaaparinaam, hiranna-suvanna  
 का यथापरिमाण, धन-धान्य का यथापरिमाण,  
 kaa yathaaparimaana, dhan-dhaanya kaa yathaaparimaana,  
 दुपय-चउप्पय का यथापरिमाण, कुव्य का  
 dupay-chauppay kaa yathaaparimaana, kuvya kaa  
 यथापरिमाण जो परिमाण किया है उसके उपरान्त  
 yathaaparimaana jo parimaana kiyaa hai usake uparaant  
 अपना करके परिग्रह रखने का पच्चक्खाण,  
 apanaa karake parigrah rakhane kaa pachchakhaana,  
 जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा,  
 javajjivaae egaavihaṇa tivihenaṇa na karemi maṇasa,

❁ श्राविकाएँ- इत्तरियपरिग्गहिय गमणे, अपरिग्गहिय गमणे कहे।

❁ Shraavikaae- ittariyapariggahiya gamane, apariggahiya gamane kahe.

jaavajjeevaae egaviham tivihenaṇa na karemi maṇasaa,  
 वयसा, कायसा ऐसे पाँचवां स्थूल परिग्रह  
 vayasaa, kaayasaa aise paanchavaa sthool parigrah  
 परिमाण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न  
 parimaana vrat ke panch aiyaaraa jaaniyavvaa na  
 समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-  
 samaayariyavvaa tam jahaa te aaloum-  
 खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे,  
 khettavattu pamaanaaikkame,  
 हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे,  
 hirannasuvanna pamaanaaikkame,  
 धणधण्णपमाणाइक्कमे,  
 dhanadhaanna pamaanaaikkame,  
 दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे,  
 dupayachauppayapamaanaaikkame,  
 कुवियपमाणाइक्कमे जो मे देवसिओ अइयारो कओ  
 kuviyapamaanaaikkame jo me devasio aiyaaro kao  
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 tassa michchha mi dukkaḍam.

छठा दिशाव्रत- उद्धदिसि का यथा परिमाण,  
**Chhathaa dishaavrat- uddhadisi kaa yathaa parimaana,**  
 अहोदिसि का यथा परिमाण, तिरियदिसि का यथा  
 ahodisi kaa yathaa parimaana, tiriyadisi kaa yathaa  
 परिमाण एवं यथा परिमाण किया है, उसके

parimaanṇ evam yathaa parimaanṇ kiyaa hai, usake  
 उपरांत स्वेच्छा काया से आगे जाकर पाँच  
 uparaant svechchhaa kaayaa se aage jaakar paanch  
 आश्रव सेवन का पच्यक्खाण, जावज्जीवाए  
 aashrav sevan kaa pachchakkhaanṇ, jaavajjeevaae  
 एगविहं\* तिविहेणं- न करेमि मणसा, वयसा,  
 egaviham\* tivihenṇam- na karemi maṇasaa, vayasaa,  
 कायसा एवं छठे दिशाव्रत के पंच  
 kaayasaa evam chhaṭṭhe dishaavrat ke panch  
 अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा  
 aiyaraa jaaniyavvaa na samaayariyavvaa  
 तं जहा ते आलोउं- उद्धदिसिपमाणाइक्कमे,  
 tam jahaa te aaloum- uḍḍhadisipamaaṇṇaaiikkame,  
 अहोदिसिपमाणाइक्कमे, तिरियदिसिपमाणाइक्कमे,  
 ahodisipamaaṇṇaaiikkame, tiriyaadisipamaaṇṇaaiikkame,  
 खेत्तवुद्धी, सइअन्तरद्धा जो में देवसिओ  
 khettavuddhee, saiantaraddhaa jo me devasio  
 अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 aiyaroo kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

\* 'एगविहं तिविहेणं न करेमि' की जगह कोई-कोई

\* 'Egaviham tivihenṇam na karemi' kee jagah koe-koe  
 'दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि' बोलते हैं।

'duviham tivihenṇam' na karemi na kaaravemi' bolate hai.

सातवां व्रत- उपभोगपरिभोगविहिं

Saatavaa vrat- upabhogaparibhogavihim

पच्यक्खायमाणे 1. उल्लणियाविहि, 2. \*दंतवणविहि,  
 pachchakkhaayamaaṇe 1. ullaniyaavihi, 2. \*dantavaṇavihi,  
 3. फलविहि, 4. अब्भंगणविहि, 5. उवट्टणाविहि,  
 3. phalavihi, 4. abbhangaṇavihi, 5. uvattṇaavihi,  
 6. मज्जणविहि, 7. वत्थविहि, 8. विलेवणविहिं, 9. पुप्फविहि,  
 6. majjaṇavihi, 7. vatthavihi, 8. vilevaṇavihi, 9. pupphavihi,

\* शुद्ध मूल पाठानुसार सातवें व्रत में अनेक शब्दों को

\* Shuddh mool paatḥaanusaar saatave vrat me anek shabdo ko  
 परिवर्तित किया गया है। जैसे-

parivartit kiyaa gayaa hai. Jaise-

1. दंतवणविहि के स्थान पर दंतवणविहि,
1. dantaṇavihi ke sthaan par dantavaṇavihi,
2. उवट्टणविहि के स्थान पर उवट्टणाविहि,
2. uvattṇavihi ke sthaan par uvattṇaavihi,
3. धूवविहि के स्थान पर धूवणविहि,
3. dhoovavihi ke sthaan par dhoovaṇavihi,
4. भक्खणविहि के स्थान पर भक्खविहि,
4. bhakkhaṇavihi ke sthaan par bhakkhavihi,
5. सूपविहि के स्थान पर सूवविहि,
5. soopavihi ke sthaan par soovavihi,
6. माहुरविहि के स्थान पर माहुरयविहि,
6. maahuravihi ke sthaan par maahurayavihi,
7. जीमणविहि के स्थान पर तेमणविहि,
7. jeemaṇavihi ke sthaan par temaṇavihi,
8. मुखवासविहि के स्थान पर मुहवासविहि।
8. mukhavaasavihi ke sthaan par muhavaasavihi.

10. आभरणविहि, 11. धूवणविहि, 12. पेज्जविहि,  
 10. aabharanavihi, 11. dhoovanavihi, 12. pejjavihi,  
 13. भक्खविहि, 14. ओदणविहि, 15. सूवविहि, 16. विगयविहि,  
 13. bhakkhavihi, 14. odanavihi, 15. soovavihi, 16. vigayavihi,  
 17. सागविहि, 18. माहुरयविहि, 19. तेमणविहि,  
 17. saagavihi, 18. maahurayavihi, 19. temanavihi,  
 20. पाणीयविहि, 21. मुहवासविहि, 22. वाहणविहि,  
 20. paaneeyavihi, 21. muhavaasavihi, 22. vaahanavihi,  
 23. उवाणहविहि, 24. सयणविहि, 25. सचित्तविहि,  
 23. uvaanahavihi, 24. sayanavihi, 25. sachittavihi,  
 26. दव्वविहि- इन 26 बोलों का यथा परिमाण  
 26. davvavihi- in 26 bolo kaa yathaa parimaan  
 किया है, इसके उपरान्त उपभोग परिभोग वस्तु को  
 kiya hai, isake uparaant upabhog paribhog vastu ko  
 भोग निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण,  
 bhog nimitt se bhogane kaa pachchakkhaan,  
 जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा  
 jaavajjeevaae egaviham tivihenam na karemi manasaa  
 वयसा, कायसा ऐसे सातवां उपभोग-परिभोग  
 vayasaa, kaayasaa aise saatavaa upabhog-paribhog  
 दुविहे पण्णत्ते तं जहा- भोयणाओ य, कम्मो य,  
 duvihe panntatte tam jahaa- bhoyanaao ya, kammo ya,  
 भोयणाओ समणोवासएणं पंच अइयारा  
 bhoyanaao samanovasaenam panch aiyaaraa  
 जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते  
 jaaniyavvaa na samaayariyavvaa, tam jahaa te

आलोउं- सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धाहारे,  
 aaloum- sachittaahaare, sachittapaḍibaddhaahaare  
 अप्पउलि-ओसहिभक्खणया, दुप्पउलि-ओसहिभक्खणया  
 appauli-osahibhakkhanayaa, duppauli-osahibhakkhanayaa  
 तुच्छोसहिभक्खणया कम्मओ य णं  
 tuchchhosahibhakkhanayaa kammao ya ṇam  
 समणोवासएणं पण्णरस कम्मादाणाइं  
 samanovasaenam panṇaras kammaadaanaaim  
 जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं तं जहा ते  
 jaaniyavvaaim na samaayariyavvaaim tam jahaa te  
 आलोउं- इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे,  
 aaloum- ingaalakamme, vaṇakamme, saadeekamme,  
 भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे,  
 bhaadeekamme, phodeekamme, dantavaanijje,  
 लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे,  
 lakkhavaanijje, rasavaanijje, kesavaanijje, visavaanijje,  
 जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे,  
 jantapeelanakamme, nillanchhanakamme,  
 दवग्गिदावणया, सरदहतलायपरिसोसणया,  
 davaggidaavanayaa, saradahatalaayaparisosanaayaa,  
 असई-पोसणया जो मे देवसिओ अइयारो कओ  
 asaee-posanayaa jo me devasio aiyaaro kao  
 तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 tassa michchha mi dukkadam.

आठवां अणट्ठादण्ड वेरमण व्रत- चउव्विहे  
**Aathavaa anatthaadand veraman vrat-** chauvvihe  
 अणट्ठादण्डे पण्णत्ते तं जहा- अवज्झाणायरिए,  
 anatthaadande panntatte tam jahaa- avajjhaanaayarie,  
 पमायायरिए, हिंसप्याणे, पावकम्मोवएसे  
 pamaayaayarie, hinsappayaane, paavakammovaese  
 एवं आठवां अणट्ठादण्ड सेवन का पच्चक्खाण  
 evam aathavaa anatthaadand sevan kaa pachchakkhaan  
 ( जिसमें आठ आगार- आए वा, राए वा, नाए वा,  
 (jisame aath aagaar- aae vaa, raae vaa, naae vaa,  
 परिवारे वा, देवे वा, नागे वा, जक्खे वा,  
 parivaare vaa, deve vaa, naage vaa, jakkhe vaa,  
 भूए वा, एत्तिएहि आगारेहि अण्णत्थ )  
 bhooe vaa, ettiehim aagaarehim anntatha)  
 जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि,  
 jaavajjeevaae duviam tivihenam na karemi, na kaaravemi,  
 मणसा, वयसा, कायसा ऐसे आठवां अणट्ठादण्ड  
 manasaa, vayasaa, kaayasaa aise aathavaa anatthaadand  
 वेरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न  
 veraman vrat ke panch aiyaaraa jaaniyavvaa na  
 समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं- कंदप्पे \*कोक्कुइए,  
 samaayariyavvaa tam jahaa te aaloum- kandappe \*kokkuie,  
 मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोग-परिभोगाइरित्ते  
 moharie, sanjuttaahigarane, uvabhog-paribhogaairitte

\* कुक्कुइए के स्थान पर कोक्कुइए शुद्ध पाठ है।

\* Kukkuie ke sthaan par kokkuie shuddh paath hai.

जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 jo me devasio aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkadam.

नववां सामायिक व्रत- सावज्जं जोगं  
**Navavaa saamaayik vrat-** saavajjam jogam  
 पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं  
 pachchakkhaami jaavaniyamam pajjuvaasaami duviam  
 तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा,  
 tivihenam na karemi, na kaaravemi, manasaa,  
 वयसा, कायसा\* ऐसी मेरी सदहणा  
 vayasaa, kaayasaa\* aisee meree saddahaanaa  
 प्ररूपणा फरसना है▲ ऐसे नववें सामायिक  
 praroopanaa pharasanaa hai▲ aise navave saamaayik  
 व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा  
 vrat ke panch aiyaaraa jaaniyavvaa na samaayariyavvaa  
 तं जहा ते आलोउं- मणदुप्पणिहाणे,  
 tam jahaa te aaloum- manaduppanihaane,

\* प्रतिक्रमण करने वाले अधिकतर सामायिक ग्रहण

\* Pratikraman karane vaale adhikatar saamaayik grahan

किये हुए रहते हैं, अतः इस प्रकार की पंक्ति रखी गई है।

kiye hue rahate hai, atah is prakaar kee pankti rakhee gaee hai.

▲ जब सामायिक व्रत में न हो- तब बोलना ऐसी मेरी

▲ Jab saamaayik vrat me na ho- tab bolanaa aisee meree

सदहणा प्ररूपणा तो है सामायिक का अवसर आये

saddahaanaa praroopanaa to hai saamaayik kaa avasar aaye

सामायिक करूं तब फरसना करके शुद्ध होऊँ।

saamaayik karoo tab pharasanaa karake shuddh hoo.

वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स  
 vayaduppanihaane, kaayaduppanihaane saamaaiyassa  
 सइ अकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठयस्स करणया जो  
 sai akaranayaa, saamaaiyassa anavatthiyassa karanayaa jo  
 मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 me devasio aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

दसवां देशावकाशिक व्रत- दिन प्रति प्रभात से  
**Dasavaa deshaavakaashik vrat-** din prati prabhaat se  
 प्रारंभ करके पूर्वादिक छहों दिशाओं में जितनी  
 praarambh karake poorvaadik chhaho dishaao me jitanee  
 भूमिका की मर्यादा रखी हो, उसके उपरान्त  
 bhoomikaa kee maryaadaa rakhee ho, usake uparaant  
 आगे जाने का तथा दूसरों को भेजने का  
 aage jaane kaa tathaa doosaro ko bhejane kaa  
 पचचक्खाण जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं  
 pachchakkhaan jaav ahorattam duviam tivihenam  
 न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा।  
 na karemi, na kaaravemi, manasaa vayasaa, kaayasaa.  
 जितनी भूमिका की हद रखी है, उसमें जो  
 Jitanee bhoomikaa kee had rakhee hai, usame jo  
 द्रव्यादिक की मर्यादा की है उसके उपरान्त  
 dravyaadik kee maryaadaa kee hai usake uparaant  
 उपभोग-परिभोग निमित्त से भोगने का पचचक्खाण  
 upabhog-paribhog nimitt se bhogane kaa pachchakkhaan  
 जाव अहोरत्तं एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा,  
 jaav ahorattam egaviham tivihenam na karemi manasaa,

jaav ahorattam egaviham tivihenam na karemi manasaa,  
 वयसा, कायसा ऐसे दसवें देशावकाशिक व्रत  
 vayasaa, kaayasaa aise dasave deshaavakaashik vrat  
 के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं  
 ke panch aiyaaraa jaaniyavvaa na samaayariyavvaa tam  
 जहा ते आलोउं- \*आणयणप्पओगे, पेसवणप्पओगे,  
 jahaa te aaloum- \*aanayanappaoge, pesavanappaoge,  
 सद्धानुवाए, रूवाणुवाए, बहिया पुग्गलपक्खेवे  
 saddaanuvaae, roovaanuvaae, bahiyaa puggalapakkheve  
 जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 jo me devasio aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

ग्यारहवां प्रतिपूर्ण पौषध व्रत- असणं पाणं  
**Gyaarahavaa pratipoorna paushadh vrat-** asanam paanam  
 खाइमं साइमं का पचचक्खाण, अबंभसेवन  
 khaaimam saaimam kaa pachchakkhaan, abambhasevan  
 का पचचक्खाण, अमुक मणि सुवर्ण का पचचक्खाण,  
 kaa pachchakkhaan, amuk mani suvarṇ kaa pachchakkhaan,  
 मालावन्नगविलेवण का पचचक्खाण, सत्थमुसलादिक  
 maalaavannagavilevan kaa pachchakkhaan, satthamusalaadik  
 सावज्ज जोग सेवन का पचचक्खाण, जाव अहोरत्तं  
 saavajj jog sevan kaa pachchakkhaan, jaav ahorattam  
 पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि, न

✧ आणवणप्पओगे पाठ अशुद्ध होने से 'आणयणप्पओगे'

✧ Aanavanappaoge paath ashuddh hone se 'aanayanappaoge'  
 पाठ किया गया है।

paath kiyaaya hai.



pajjuvaasaami duvigham tivihenam na karemi, na  
कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा\*- ऐसी मेरी  
kaaravemi, maṇasaa, vayasaa, kaayasaa\*- aisee meree  
सद्दहणा प्ररूपणा तो है, पौषध का अवसर  
saddahaṇaa praroopanaa to hai, paushadh kaa avasar  
आये पौषध करूं तब फरसना करके शुद्ध  
aaye paushadh karoo tab pharasanaa karake shuddh  
होऊं एवं ग्यारहवें प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के  
hooo evam gyaarahave pratipoorn paushadh vrat ke  
पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा  
panch aiyaaraa jaaniyavvaa na samaayariyavvaa  
तं जहा ते आलोउं- अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय  
tam jahaa te aaloum- appaḍilehiya-duppaḍilehiya  
सेज्जासंथारए, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय  
sejjaasantharae, appamajjiya-duppamajjiya  
सेज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय  
sejjaasantharae, appaḍilehiya-duppaḍilehiya  
उच्चारपासवणभूमी\*, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय  
uchchaarapaasavanabhoomi\*, appamajjiya-duppamajjiya

\* जब पौषधव्रत में हो तब 'ऐसी मेरी सद्दहणा

\* Jab paushadhavrat me ho tab 'aisee meree saddahaṇaa  
प्ररूपणा फरसना है' एवं ग्यारहवें प्रतिपूर्ण

praroopanaa pharasanaa hai' evam gyaarahave pratipoorn  
पौषधव्रत के.... ऐसा बोलना चाहिए।

paushadhavrat ke.... aisaa bolanaa chaahie.

❖ मूल पाठानुसार 'भूमि' के स्थान पर 'भूमी' शुद्ध है।

❖ Mool paathanusaar 'bhoomi' ke sthaan par 'bhoomie' shuddh hai.

उच्चारपासवणभूमी, पोसहोववासस्स\*  
uchchaarapaasavanabhoomie, posahovavaasassa\*  
सम्मं अणणुपालणया जो मे देवसिओ  
sammam ananupaalanayaa jo me devasio  
अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
aiyaaro kao tassa michchhaa mi dukkaḍam.

बारहवां अतिथिसंविभाग व्रत- समणे णिगंथे  
Baarahavaa atithisamvibhaag vrat- samane ṇigganthe  
फासुयएसणिज्जेणं-असण-पाण-खाइम-साइम-  
phaasuyaesanijjenam-asan-paan-khaaim-saaim-  
वत्थपडिग्गह-कंबलपायपुंछणेणं  
vatthapaḍiggah-kambalapaayapunchhanenam  
पाडिहारिय-पीढ-फलग-सेज्जासंथारएणं  
paadihaariya-peedha-phalag-sejjaasantharaenam  
ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे विहरामि  
osahabhesajjenam paḍilaabhemaane viharaami  
ऐसी मेरी सद्दहणा प्ररूपणा है, साधु-  
aisee meree saddahaṇaa praroopanaa hai, saadhu-  
साध्वी का योग मिलने पर निर्दोष दान दूं  
saadhvee kaa yog milane par nirdosh daan doo  
तब शुद्ध होऊं एवं बारहवें अतिथिसंविभाग

◆ मूल पाठानुसार 'पोसहस्स' के स्थान पर 'पोसहोववासस्स'

◆ Mool paathanusaar 'posahassa' ke sthaan par 'posahovavaasassa'  
शुद्ध है।

shuddh hai.



tab shuddh hoo evam baarahave atithisamvibhaag  
 व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा  
 vrat ke panch aiyaaraa jaaniyavaa na samaayariyavvaa  
 तं जहा ते आलोउं- सचित्तनिक्खेवणया,  
 tam jahaa te aaloum- sachittanikkhevanayaa,  
 सचित्तपिहणया, कालाइक्कमे, परववएसे,  
 sachittapihanayaa, kaalaaikkame, paravavaese,  
 ✧मच्छरिआ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स  
 ✧machchhariaa jo me devasio aiyaaro kao tassa  
 मिच्छा मि दुक्कडं।  
 michchhaa mi dukkaḍam.

## 14. बड़ी संलेखना का पाठ

### 14. BAḌEE SANLEKHANAA KAA PAATH

अह भंते! अपच्छिम मारणांतिय संलेहणा,  
 Aha bhante! apachchhim maaraṇantiya sanlehaṇaa  
 झूसणा आराहणा पौषधशाला पूंजे,  
 jhoosanaa aaraahanaa paushadhashaalaa poonje,  
 पूंज के उच्चार-पासवण भूमिका पडिलेहे,  
 poonj ke uchhaar-paasavaṇ bhoomikaa paḍilehe,  
 पडिलेहे के गमणागमणे पडिक्कमे, पडिक्कमे के  
 paḍilehe ke gamanaagamaṇe paḍikkame, paḍikkam ke

✧ मूल पाठानुसार 'मच्छरिआए' के स्थान पर

✧ Mool paathaanausaar 'machchhariaae ke sthaan par  
 'मच्छरिआ' शुद्ध है।

'machchhariaa' shuddh hai.

दर्भादिक संथारा संथारे, संथार के दर्भादिक  
 darbhaadik santhaaraa santhaare, santhaar ke darbhaadik  
 संथारा दुरुहे, दुरुह के पूर्व तथा उत्तर दिशि  
 santhaaraa duruhe, duruh ke poorv tathaa uttar dishi  
 सम्मुख पर्यंकादिक आसन में बैठे, बैठकर  
 sammukh paryankaadik aasan me baiṭhe, baiṭhakar  
 करयलसंपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं  
 karayalasampariggahiyam sirasaavattam matthae anjalim  
 कट्टु एवं वयासी “णमोत्थु णं अरिहंताणं  
 kaṭṭu evam vayaasee "ṇamotthu ṇam arihantaṇam  
 भगवंताणं जाव संपत्ताणं” ऐसे अनन्त सिद्ध  
 bhagavantaṇam jaav sampattaṇam" aise anant siddh  
 भगवान को नमस्कार करके “णमोत्थु णं  
 bhagavaan ko namaskaar karake "ṇamotthu ṇam  
 अरिहंताणं भगवंताणं जाव  
 arihantaṇam bhagavantaṇam jaav  
 संपाविउकामाणं” जयवन्ते वर्तमान काल में  
 sampaaaviukaamaṇam" jayavante vartamaan kaal me  
 महाविदेह क्षेत्र में विचरते हुए तीर्थकर  
 mahaavideh kshetra me vicharate hue teerthankar  
 भगवन्तो को नमस्कार करके अपने धर्माचार्य  
 bhagavanto ko namaskaar karake apane dharmaachaarya  
 जी महाराज ( यहाँ अपने धर्माचार्य जी  
 jee mahaaraaj ( yahaa apane dharmaachaarya jee  
 महाराज का नाम लेना ) को नमस्कार करता हूँ।  
 mahaaraaj kaa naam lenaa) ko namaskaar karataa hoo.

साधु प्रमुख चारों तीर्थों को खमाकर,  
 Saadhu pramukh chaaro teertho ko khamaakar,  
 सर्व जीवराशि को खमाकर पहले जो व्रत आदरे हैं,  
 sarv jeevaraashi ko khamaakar pahale jo vrat aadare hai,  
 उनमें जो अतिचार\* दोष लगे हों, वे सर्व आलोच के,  
 uname jo atichaar\* dosh lage ho, ve sarv aaloch ke,  
 पडिक्कम के, निन्द के निःशल्य होकर के, सव्वं  
 padikkam ke, nind ke, nishalya hokar ke, savvam  
 पाणाइवायं पच्चक्खामि, सव्वं मुसावायं  
 paanaaivaayam pachchakkhaami, savvam musaavaayam  
 पच्चक्खामि, सव्वं अदिण्णादाणं  
 pachchakkhaami, savvam adinnaadaanam  
 पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि,  
 pachchakkhaami, savvam mehunam pachchakkhaami,  
 सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, सव्वं कोहं  
 savvam pariggaham pachchakkhaami, savvam koham  
 माणं जाव मिच्छादंसणसल्लं  
 maanam jaav michchhaadansanasallam  
 पच्चक्खामि, सव्वं अकरणिज्जं जोगं  
 pachchakkhaami, savvam akaranijjam jogam

\* बारह व्रतों के 60 अतिचारों का विशेष खुलासा श्री जैन

\* Baarah vrato ke 60 atichaaro kaa vishesh khulaasaa shree jain  
 सिद्धान्त बोल संग्रह प्रथम भाग के बोल नम्बर 301 से 392  
 siddhaant bol sangrah pratham bhaag ke bol nambar 301 se 392  
 तक में है।

tak me hai.

पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि  
 pachchakkhaami jaavajjeevaae tiviham tivihenam na karemi  
 न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि  
 na kaaravemi karantampi annam na samanujanaami  
 मणसा, वयसा, कायसा ऐसे अठारह पापस्थान  
 manasaa, vayasaa, kaayasaa aise aatharah paapasthaan  
 पच्चक्ख कर सव्वं असणं पाणं खाइमं  
 pachchakkh kar savvam asanam paanam khaaimam  
 साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि  
 saaimam chauvviham pi aahaaram pachchakkhaami  
 जावज्जीवाए ऐसे चारों आहार पच्चक्ख कर  
 jaavajjeevaae aise chaaro aahaar pachchakkh kar  
 जं पि य इमं सरिरं इट्ठं कंतं पियं  
 jam pi ya imam sareeram itttham kantam piyam  
 मणुण्णं, मणामं, धिज्जं विसासियं, संमयं,  
 manunnam, mananam, dhijjam visaasiyam, समयं,  
 मणुण्णं, मणामं, धिज्जं विसासियं, संमयं,  
 manunnam, mananam, dhijjam visaasiyam, समयं,  
 अणुमयं, बहुमयं, भण्डकरण्डसमाणं\*,  
 anumayam, bahumayam, bhandakaraṇḍasamaanam\*,

टिप्पण- संलेखना प्रकरण में आगमानुसार शुद्ध

Tippan- sanlekhanaa prakaran me aagamaanusaaar shuddh  
 पाठ इस प्रकार हैं-

paath is prakaar hai-

\* रयणकरण्डगभूयं शब्द नहीं है। अतः यह शब्द

\* Rayanakaraṇḍagabhooyam shabd nahee hai. Atah yah shabd  
 हटा दिया गया है।

hataa diyaa gayaa hai.

मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा,  
 maa ṇam seeyam, maa ṇam uṇham, maa ṇam khuhaa,  
 मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा,  
 maa ṇam pivaasaa, maa ṇam vaalaa, maa ṇam chora,  
 \*मा णं दंसा, मा णं मसगा, मा णं वाइय  
 \*maa ṇam dansaa, maa ṇam masagaa, maa ṇam vaaiya  
 पित्तिय \*सेंभिय सण्णिवाइय विविहा रोगायंका  
 pittiya \*sembhiya, saṇṇivaaiya vivihaa rogaayankaa  
 परिसहोवसग्गा \*फुसंतु त्ति कट्टु एवं पि य णं  
 parisahovasaggaa \*phusantu tti kaṭṭu evam pi ya ṇam  
 चरमेहिं ऊसासणिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु इस  
 charamehim usaasaṇissaasehim vosiraami tti kaṭṭu is

---

\* माणं दंसमसगा शब्द न होकर मा णं दंसा मा

\* Maṇam dansamasagaa shabd na hokar maa ṇam dansaa maa ṇam masagaa paṭh hai.

ṇam masagaa paṭh hai.

\* कप्पियं शब्द संलेखना प्रकरण में नहीं है एवं

\* Kappiyam shabd sanlekhanaa prakaraṇ me nahee hai evam

संभीमं शब्द शुद्ध न होकर संभिय शब्द शुद्ध है।

sambheemam shabd shuddh na hokar sembhiya shabd shuddh hai.

\* संलेखना प्रकरण में फासा शब्द नहीं है।

\* Sanlekhanaa prakaraṇ me phaasaa shabd nahee hai.

प्रकार \*संलेखना करके भक्त पान का  
 prakaar \*sanlekhanaa karake bhakt paan kaa  
 प्रत्याख्यान करके काल की आकांक्षा न करते हुए  
 pratyaaakhyaan karake kaal kee aakaankshaa na karate hue  
 विचरण करूं ऐसी मेरी सदहणा प्ररूपणा  
 vicharaṇ karoo aisee meree saddahaṇaa praroopaṇaa  
 तो है संलेखना का अवसर आए संलेखना करूं  
 to hai sanlekhanaa kaa avasar aae sanlekhanaa karoo  
 तब फरसना करके शुद्ध होऊं\*  
 tab pharasanaa karake shuddh hoo\*.

## 15. तस्स धम्मस्स का पाठ

### 15. TASSA DHAMMASSA KAA PAAṬH

तस्स धम्मस्स केवलपण्णत्तस्स अब्भुट्ठोमि

Tassa dhammassa kevalipaṇṇattassa abbhuṭṭhiomi

---

\* यह पंक्ति आगमों में आये संलेखना संबंधी

\* Yah pankti aagamo me aaye sanlekhanaa sambandhee

वर्णन में शास्त्र के भावों के अनुसार हिंदी भाषा में

varṇan me shaastra ke bhaavo ke anusaar hindee bhaashaa me joḍī गई है।

joḍee gaee hai.

☆ यहाँ आने वाले पाँच अतिचारों को निष्प्रयोजनता के

☆ Yahaa aane vaale paanch atichaaro ko nishprayojanataa ke कारण हटाया गया है।

kaaraṇ haṭaayaa gayaa hai.

आराहणाए, विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कंतो  
 aaraahanaae, viraomi viraahanaae tivihenam paḍikkanto  
 वन्दामि जिणे चउव्वीसं।  
 vandaami jine chauvveesam.

## 16. पाँच पदों की भाव वन्दना के पाठ 16. PAANCH PADO KEE BHAAV VANDANAA KE PAATH

“णमो अरिहंताणं” अर्थात् पहले पद में श्री  
 " Nāmo arihantaṇam" arthaat pahale pad me shree  
 अरिहंत भगवान जघन्य 20 तीर्थकरजी,  
 arihant bhagavaan jaghanya 20 teerthankarajee,  
 \*उत्कृष्ट 170 ( एक सौ सत्तर ) देवाधि देवजी,  
 \*utkriṣṭ 170 (ek sau sattar) devaadhi devajee,  
 वर्तमान काल में बीस विहरमान तीर्थकरजी  
 vartamaan kaal me bees viharamaan teerthankarajee  
 महाविदेह क्षेत्र में विचरते हैं। एक हजार आठ  
 mahaavideh kshetra me vicharate hai. Ek hazaar aath  
 \* जघन्य का तात्पर्य सबसे कम एवं उत्कृष्ट का तात्पर्य  
 \* Jaghanya kaa taatparya sabase kam evem utkriṣṭ kaa taatparya  
 सर्वाधिक होता है। एक साथ तीर्थकर भगवान उत्कृष्ट 170  
 sarvaadhik hotaa hai. Ek saath teerthankar bhagavaan utkriṣṭ 170  
 (सभी क्षेत्रों को मिलाकर) हो सकते हैं, इसलिए 160 की संख्या  
 (sabhi kshetro ko milaakar) ho sakate hai, isalie 160 ki sankhyaa  
 उत्कृष्ट न होने से 160 की संख्या को हटाया गया है।  
 utkriṣṭ na hone se 160 kee sankhyaa ko haṭaayaa gayaa hai.

लक्षण के धारक, 34 अतिशय 35 वाणी के गुणों से युक्त,  
 lakshan ke dhaarak, 34 atishay, 35 vaanee ke guṇo se yukt,  
 64 इन्द्रों के वंदनीय, पूजनीय, अठारह दोष रहित,  
 64 indro ke vandaneeya, poojaneeya, aṭhaarah doṣ rahit,  
 बारह गुण सहित\*- 1. अणासवे, 2. अममे, 3. अकिंचणे,  
 baarah guṇ sahit\*- 1. anaasave, 2. amame, 3. akinchane,  
 4. छिन्नसोए, 5. निरुवलेवे, 6. ववगय-पेम-राग-दोस-मोहे,  
 4. chhinnasoE, 5. niruvaleve, 6. vavagay-pem-raag-dos-mohe,  
 7. निग्गंथस्स पावयणं देसए, 8. सत्थनायगे,  
 7. nigganṭhassa paavayaṇam desae, 8. satthanaayage,  
 9. अणंतनाणी, 10. अणंतदंसी, 11. अणंतचरित्ते,  
 9. aṇantanaanee, 10. aṇantadansee, 11. aṇantacharitte,  
 12. अणंतवीरियसंजुत्ते आठ महाप्रतिहार्यो से  
 12. aṇantaveeriyasanjutte aath mahaapratiharyo se  
 युक्त अढ़ाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र में विचरें तथा  
 yukt aḍhaae dweep pandrah kshetr me vichare tathaa

✧ दिव्य ध्वनि, भामण्डल आदि प्रतिहार्य तीर्थकर देवों का

✧ Divya dhvani, bhaamaṇḍal aadi pratihaarya teerthankar devo kaa  
 बाह्य वैभव है व इन प्रतिहार्यो में से अधिकांश देवकृत  
 baahya vaibhav hai va in pratihaaryo me se adhikaansh devakrit  
 होते हैं। श्रीमद् औपपातिक सूत्र आदि ग्रंथों में अन्य  
 hote hai. Shreemad Aupapaatik sootra aadi grantho me anya  
 प्रकार से उपलब्ध 12 गुण, जो अरिहंतो के मौलिक आध्यात्मिक  
 prakaar se upalabd 12 guṇ jo arihanto ke maulik aadhyaatmik  
 गुण हैं, उन्हें प्रथम भाव वंदना में स्थान दिया गया है।  
 guṇ hai, unhe pratham bhaav vandana me sthaan diyaa gayaa hai.

\*पृथक्त्व करोड़ केवली केवलज्ञान, केवलदर्शन के  
 \*prithaktva karod kevalee, kevalagyaan, kevaladarshan ke  
 धरणहार, सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के  
 dharanahaar, sarv dravya, kshetra, kaal, bhaav ke  
 जाननहार हैं।

jaananahaar hai.

सवैया- नमो श्री अरिहंत, कर्मों का किया अन्त,  
 Savaiyaa- Namō shree arihant, karmo kaa kiya ant,  
 हुआ सो केवलवन्त, करुणा भण्डारी हैं।

huua so kevalavant, karunaa bhandaree hai.

अतिशय चौंतीस धार, पैतीस वाणी उच्चार,  
 Atishay chautees dhaar, paitees vaanee uchchaar,  
 समझावे नर-नार, पर उपकारी है।

samajhaave nar-naar, par upakaaree hai.

शरीर सुन्दराकार, सूरज सो झलकार,  
 Shareer sundaraakaar, sooraj so jhalakaar,  
 गुण हैं अनन्तसार, दोष परिहारी है।

gun hai anantasaar, dosh parihaaree hai.

कहत है तिलोकरिख, मन, वच, काया करी,  
 Kahat hai tilokarikh, man, vach, kaayaa karee,  
 लुलि-लुलि बारम्बार, वन्दना हमारी है ॥1॥

luli-luli baarambaar, vandanaa hamaaree hai ॥1॥

\* आगमानुसार केवलियों की संख्या पृथक्त्व करोड़ हैं।

\* Aagamaanusaar kevaliyo kee sankhyaa prithaktva karod hai.

ऐसे श्री अरिहंत भगवान दीनदयाल जी महाराज  
 Aise shree arihant bhagavaan deenadayaal jee mahaaraaj  
 आपकी दिवस सम्बन्धी अविनय आशातना की हो  
 aapakee divas sambandhee avinay aashaatanaa kee ho  
 तो, हे अरिहंत भगवान! मेरा अपराध बारम्बार  
 to, he arihant bhagavaan! meraa aparaadh baarambaar  
 क्षमा करिए। हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर  
 kshamaa kariye. Haath jod, maan mod, sheesh namaakar  
 तिक्खुत्तो के पाठ से 1008 बार वन्दना नमस्कार  
 tikkhutto ke paath se 1008 baar vandanaa namaskaar  
 करता हूँ। ( यहाँ तिक्खुत्तो का पाठ बोलें )  
 karataa hoo. (yahaa tikkhutto kaa paath bole)  
 आप मांगलिक हो, उत्तम हो। हे स्वामिन्! हे नाथ! आपका  
 Aap maangalik ho, uttam ho. he svaamin! he naath! aapakaa  
 इस भव, पर भव, भव-भव में सदा शरण होवे।  
 is bhav, par bhav, bhav-bhav me sadaa sharan hove.

## द्वितीय भाव वंदना

### DVITEEYA BHAAV VANDANAA

‘णमो सिद्धाणं’ अर्थात् दूसरे पद में श्री

'Namō siddhaanam' arthaat doosare pad me shree

सिद्ध भगवान आठ कर्मों का क्षय करके मोक्ष

siddh bhagavaan aath karmo kaa kshay karake moksh

पहुँचे हैं। तीर्थ सिद्धः, अतीर्थ सिद्ध, तीर्थकर सिद्ध,  
 pahunche hai. Teerth siddhः, ateerth siddh, teerthankar siddh,  
 अतीर्थकर सिद्ध, स्वयंबुद्ध सिद्ध, प्रत्येकबुद्ध सिद्ध,  
 ateerthankar siddh, svayambuddh siddh, pratyekabuddh siddh,  
 बुद्धबोधित सिद्ध, स्त्रीलिंग सिद्ध, पुरुषलिंग सिद्ध,  
 buddhabodhit siddh, streeling siddh, purushaling siddh,  
 नपुंसकलिंग सिद्ध, स्वलिंग सिद्ध, अन्यलिंग सिद्ध,  
 napunsakaling siddh, svaling siddh, anyaling siddh,  
 गृहस्थलिंग सिद्ध, एक सिद्ध, अनेक सिद्ध, जहाँ जन्म  
 grihasthaling siddh, ek siddh, anek siddh, jahaa janm  
 नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं,  
 nahee, jaraa nahee, maran nahee, bhay nahee, rog nahee,  
 शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं, कर्म नहीं,  
 shok nahee, dukh nahee, daaridraya nahee, karm nahee  
 काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, चाकर नहीं,  
 kaayaa nahee, moh nahee, maayaa nahee, chaakar nahee

❖ यहाँ तीर्थसिद्धा, अतीर्थसिद्धा आदि में 'सिद्धा' शब्द

❖ Yahaa teerthasiddhaa, ateerthasiddhaa aadi me 'siddhaa' shabd  
 के स्थान पर सर्वत्र 'सिद्ध' किया गया है। श्रीमद्  
 ke sthaan par sarvatra 'siddh' kiya gayaa hai. Shreemad  
 नंदीसूत्र में आगत तीर्थसिद्धा आदि अर्द्धमागधी  
 Nandeesootra me aagat teerthasiddhaa aadi arddhamaagadhee  
 भाषा के शब्द हैं। यहाँ पाठ हिन्दी में होने से 'सिद्धा'  
 bhaashaa ke shabd hai. Yahaa paath hindee me hone se 'siddhaa'  
 शब्द न रखकर 'सिद्ध' शब्द रखा गया है।  
 shabd na rakhakar 'siddh' shabd rakhaa gayaa hai.

ठाकर नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं, ज्योत में ज्योत  
 thaakar nahee, bhookh nahee, trishaa nahee, jyot me jyot  
 विराजमान, सकल कार्य सिद्ध करके 14 प्रकारे 15  
 viraajamaan, sakal kaarya siddh karake 14 prakaare 15  
 भेदे अनन्त सिद्ध भगवान हुए हैं। अनन्त ज्ञान,  
 bhede anant siddh bhagavaan hue hai. Anant gyaan,  
 अनन्त दर्शन, अव्याबाध सुख, क्षायिक चारित्र\*,  
 anant darshan, avyaabaadh sukh, kshaayik chaaritra\*,  
 अक्षय स्थिति+, अमूर्तिक, अगुरुलघु, अनन्त वीर्य- इन आठ  
 akshay sthiti+, amoortik, agurulaghu, anant veerya- in aath  
 गुणों से युक्त हैं।  
 guno se yukt hai.

\* मोहनीय कर्म के दो भेद हैं- दर्शन मोहनीय एवं

\* Mohaneeya karm ke do bhed hai- darshan mohaneeya evam  
 चारित्र मोहनीय। क्षायिक सम्यक्त्व कहने से सिर्फ दर्शन  
 chaaritra mohaneeya. kshaayik samyaktva kahane se sirph darshan  
 मोहनीय के क्षय का बोध होता है। अतः क्षायिक चारित्र  
 mohaneeya ke kshay kaa bodh hotaa hai. Atah kshaayik chaaritra  
 कहा है जो दर्शन मोहनीय एवं चारित्र मोहनीय दोनों  
 kahaa hai jo darshan mohaneeya evam chaaritra mohaneeya dono  
 के क्षय होने पर ही प्रकट हो सकता है।

ke kshay hone par hee prakat ho sakataa hai.

✦ अटल अवगाहना की अपेक्षा अक्षय स्थिति

✦ Aṭal avagaahanaa kee apekshaa akshay sthiti

कहने से आयु कर्म के क्षय का सम्यक् बोध होता है।

kahane se aayu karm ke kshay kaa samyak bodh hotaa hai.

सवैया- सकल करम टाल, वश कर लियो काल,  
 Savaiyaa - Sakal karam taal, vash kar liyo kaal,  
 मुगति में रह्या माल, आत्मा को तारी है।  
 mugati me rahyaa maal, aatmaa ko taaree hai.  
 देखत सकल भाव, हुआ है जगत राव,  
 Dekhat sakal bhaav, huua hai jagat raav,  
 सदा ही क्षायिक भाव, भये अविकारी है।  
 sadaa hee kshaayik bhaav, bhaye avikaaree hai.  
 अचल अटल रूप, आवे नहीं भवकूप,  
 Achal aṭal roop, aave nahee bhavakoop.  
 अनूप सरूप ऊप, ऐसे सिद्ध धारी है।  
 anoop saroop up, aise siddh dhaaree hai.  
 कहत है तिलोकरिख, बताओ हे वास प्रभु,  
 Kahat hai tilokarikh, bataao he vaas prabhu  
 सदा ही उगंते सूर, वंदना हमारी है ॥2॥  
 sadaa hee ugante soor, vandanaa hamaaree hai ॥2॥  
 ऐसे श्री सिद्ध भगवान आपकी दिवस सम्बन्धी  
 Aise shree siddh bhagavaan aapakee divas sambandhee  
 अविनय अशातना की हो तो, हे सिद्ध भगवन्!  
 avinay ashaatanaa kee ho to, he siddh bhagavan!  
 मेरा अपराध बारम्बार क्षमा करिए। हाथ जोड़,  
 meraa aparaadh baarambaar kshamaa karie. Haath joḍ,  
 मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुत्तो के पाठ से 1008  
 maan moḍ, sheesh namaakar tikkhutto ke paath se 1008  
 बार वन्दना नमस्कार करता हूँ। (यहाँ तिक्खुत्तो  
 baar vandanna namaskaar karataa hoo. (yahaa tikkhutto

का पाठ बोलें) आप मांगलिक हो। उत्तम हो। हे स्वामिन्!  
 kaa paath bole) Aap maangalik ho. uttam ho. he svaamin!  
 हे नाथ! आपका इस भव, पर भव, भव-भव में  
 he naath! aapakaa is bhav, par bhav, bhav-bhav me  
 सदा शरण होवे।  
 sadaa sharaṇ hove.

## तृतीय भाव वंदना

### TRITEEYA BHAAV VANDANAA

‘णमो आयरियाणं’- अर्थात् तीसरे पद में श्री  
 "Ṇamo aayariyaṇam"- arthaat teesare pad me shree  
 आचार्यजी महाराज! ज्ञानाचार, दर्शनाचार,  
 aachaaryajee mahaaraaj! gyaanaachaar, darshanaachaar  
 चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार- ये पाँच  
 chaaritraachaar, tapaachaar, veeryaachaar- ye paanch  
 आचार पाले, पाँच महाव्रत पाले, पाँच इन्द्रिय जीते,  
 aachaar paale, paanch mahaavrat paale, paanch indriya jeete,  
 चार कषाय टाले, नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले,  
 chaar kashaaya taale, navavaaḍ sahit brahmacharya paale,  
 पाँच समिति तीन गुप्ति शुद्ध आराधे, ये 36 गुण  
 paanch samiti teen gupti shuddh aaraadhe, ye 36 guṇ  
 करके सहित हैं। अनाचार के त्यागी और आठ सम्पदा-  
 karake sahit hai. Anaachaar ke tyagee aur aath sampadaa-

1. आचार सम्पदा, 2. श्रुत सम्पदा, 3. शरीर सम्पदा, 4. वचन सम्पदा, 5. वाचना सम्पदा, 6. मति सम्पदा, 7. प्रयोग मति सम्पदा, 8. संग्रह परिज्ञा सम्पदा सहित है।

1. aachaar sampadaa, 2. shrut sampadaa, 3. shareer sampadaa, 4. vachan sampadaa, 5. vaachanaa sampadaa, 6. mati sampadaa, 7. prayog mati sampadaa, 8. sangrah parigyaa sampadaa sahit hai.

8. संग्रह परिज्ञा सम्पदा सहित है।  
 8. sangrah parigyaa sampadaa sahit hai.

सवैया- गुण हैं छत्तीस पूर, धरत धरम ऊर,  
 Savaiyaa- Guṇ hai chhattees poor, dharat dharam oor,  
 मारत करम क्रूर, सुमति विचारी है।  
 maarat karam kroor, sumati vichaaree hai.

शुद्ध सो आचारवन्त, सुन्दर है रूप कन्त,  
 Shuddh so aachaaravant, sundar hai roop kant,  
 भण्या है सब ही सिद्धान्त, वाचणी सुप्यारी है।  
 bhanyaa hai sab hee siddhant, vaachanee supyaaree hai.

अधिक मधुर वेण, कोई नहीं लोपे केण,  
 Adhik madhur ven, koe nahee lope ken,  
 सकल जीवों का सेण, कीरत अपारी है।  
 sakal jeevo kaa sen, keerat apaaree hai.

कहत है तिलोकरिख, हितकारी देत सीख,  
 Kahat hai tilokarikh, hitakaaree det seekh,  
 ऐसे आचारजजी को, वन्दना हमारी है ॥3॥  
 aise aacharajajee ko, vandanaa hamaaree hai ॥3॥

यहाँ वर्तमान आचार्य श्री जी के नाम का श्लोक  
 Yahaa vartamaan aachaarya shree jee ke naam kaa shlok  
 अथवा सवैया बोलना।  
 athavaa savaiyaa bolanaa

राम गुरु गुणवान, जिनशासन की शान,  
 Raam guru guṇavaan, jinashaasan kee shaan,  
 देते हैं धरम दान, बाल ब्रह्मचारी है।  
 dete hai dharam daan, baal brahmachaaree hai.

हुकम गच्छ सरताज, सिंह सम रहे गाज,  
 Hukm gachch sarataaj, sinha sam rahe gaaj,  
 सकल सुधारे काज, महा उपकारी है।  
 sakal sudhaare kaaj, mahaa upakaaree hai.

श्रुतज्ञान है अपार, मौन तप से है प्यार,  
 Shrutagyaan hai apaar, maun tap se hai pyaar,  
 संयम निरतिचार, सम भाव भारी है।  
 sanyam niratichaar, sam bhaav bhaaree hai.

चमके है भव्य भाल, चले है आगम चाल,  
 Chamake hai bhavya bhaal, chale hai aagam chaal,  
 गवरा नेमि के लाल, वंदना हमारी है ॥1॥  
 gavaraa nemi ke laal, vandanaa hamaaree hai ॥1॥

ऐसे श्री आचार्य श्री महाराज न्यायपक्षी,  
 Aise shree aachaarya shree mahaaraaj nyaayapakshee,  
 भद्रिक परिणामी, परम पूज्य, कल्पनीय अचित्त  
 bhadrικ pariṇaamee, param poojya, kalpaneeya achitt



वस्तु के ग्रहणहार, सचित्त के त्यागी, वैरागी,  
 vastu ke grahaṇahaar, sachitt ke tyaagee, vairaagee,  
 महागुणी, गुणों के अनुरागी, सौभागी, सरल  
 mahaagunee, guṇo ke anuraagee, saubhaagee, saral  
 स्वभावी ऐसे धर्मगुरु धर्माचार्य आचार्य  
 svabhaavee aise dharmaguru dharmaachaarya aachaarya  
 भगवन्\* आपश्री की दिवस सम्बन्धी अविनय  
 bhagavan\* aapashree kee divas sambandhee avinay  
 आशातना की हो तो हे आचार्य भगवन्! मेरा  
 aashaatanaa kee ho to he aachaarya bhagavan! meraa  
 अपराध बारम्बार क्षमा करिए। हाथ जोड़, मान मोड़,  
 aparaadh baarambaar kshamaa karie. Haath jod, maan mod.  
 शीश नमाकर तिक्खुत्तो के पाठ से 1008 बार वन्दना  
 sheesh namaakar tikkhutto ke paath se 1008 baar vandanaa  
 नमस्कार करता हूँ। ( यहाँ तिक्खुत्तो का पाठ बोलना )  
 namaskaar karataa hoo. (yahaa tikkhutto kaa paath bolanaa)  
 आप मांगलिक हो, उत्तम हो, हे स्वामिन्! हे नाथ!  
 Aap maangalik ho, uttam ho, he svaaminn! he naath!  
 आपका इस भव, पर भव, भव-भव में सदा शरण होवे।  
 aapakaa is bhav, par bhav, bhav-bhav me sadaa sharaṇhove.

★ यहाँ पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अपने आचार्य

★ Yahaa par shraavak-shraavikaao dvaaraa apane aachaarya  
 भगवन् का नाम लिया जाता है।

bhagavan kaa naam liyaa jaataa hai.

## चौथी भाव वन्दना

### CHAUTHEE BHAAV VANDANAA

‘णमो उवज्झायाणं’- अर्थात् चौथे पद में श्री  
 Ṇamo uvajjhaayaṇam- arthaat chauthe pad me shree  
 उपाध्याय जी महाराज 12 अंग के जानकार  
 upaadhyaay jee mahaaraaj 12 ang ke jaanakaar  
 चरण सत्तरी, करण सत्तरी एवं 8 प्रकार की  
 charaṇ sattaree, karaṇ sattaree evam 8 prakaar kee  
 प्रभावना से संपन्न, तीन योग का निग्रह करने  
 prabhaavanaa se sampann, teen yog kaa nigrāh karane  
 वाले इस प्रकार 25 गुणों से युक्त हैं\* वर्तमान काल  
 vaale is prakaar 25 guṇo se yukt hai\* vartamaan kaal

◆ श्रावक और साधु प्रतिक्रमण में चौथी भाव वन्दना

◆ Shraavak aur saadhu pratikramaṇ me chauthee bhaav vandanaa  
 में उपाध्याय जी के 25 गुण इस प्रकार कहे जाते रहे हैं-

me upaadhyaay jee ke 25 guṇ is prakaar kahe jaate rahe hai-

11 अंग, 12 उपांग, चरण सत्तरी, करण सत्तरी। ये 25 गुण

11 ang, 12 upaang, charaṇ sattaree, karaṇ sattaree. Ye 25 guṇ

प्रधानतया जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की अपेक्षा से

pradhaanatayaa jamboodveep ke bharat kshetra kee apekshaa se

है एवं अत्यन्त अर्वाचीन हैं। जबकि आवश्यक निर्युक्ति,

hai evam atyant arvaacheen hai. Jabaki aavashyak niryukti,

विशेषावश्यक भाषा आदि अनेक प्राचीन ग्रंथों में

visheshaavashyak bhaashaa aadi anek praacheen grantho me

उपाध्याय जी को द्वादशांगी का ज्ञाता बताया गया

upaadhyaay jee ko dvaadashaangee kaa gyaataa bataayaa gayaa

है। जिस प्रकार अरिहंतों के 12 गुणों में सर्व अरिहंतों का, 8 गुणों

में भरत क्षेत्र में निम्नोक्त 32 सूत्रों के जानकार है।  
 me bharat kshetra me nimnokt 32 sootro ke jaanakaar hai.  
 ग्यारह अंग- आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ,  
 Gyaarah ang- Aayaaro, sooyagaḍo, ṭhaaṇam, samavaao  
 वियाहपन्नत्ती, णायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ,  
 viyaahapannattee, ṇaayaadhammakahaao, uvaasagadasaao,  
 अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ,  
 antagaḍadasaao, aṇuttarovavaaiyadasaao,  
 पणहावागरणाइं, विवागसूयं।  
 paṇhaavaagaraṇaaim, vivaagasooyam.  
 बारह उपांग- ओवाइयं, रायपसेणियं,  
 Baarah upaang- Ovaaiyam, raayapaseniyaṃ,  
 जीवाजीवाभिगमे, पन्नवणा, जम्बूदीवपन्नत्ती,

hai. Jis prakaar arihanto ke 12 guṇo me sarv arihanto kaa, 8 guṇo  
 में सर्व सिद्धों का, 36 गुणों में सर्व आचार्यों का एवं 27  
 me sarv siddho kaa, 36 guṇo me sarv aachaaryo kaa evam 27  
 गुणों में सर्व साधुजी का समावेश हो जाता है, उसी प्रकार  
 guṇo me sarv saadhujee ka samaavesh ho jaataa hai, usee prakaar  
 उपाध्याय जी के 25 गुणों में भी सर्व उपाध्यायों का  
 upaadhyaay jee ke 25 guṇo me bhee sarv upaadhyaayo kaa  
 समावेश हो जाना चाहिये। 11 अंग, 12 उपांग कहने से  
 samaavesh ho jaanaa chaahiye. 11 ang, 12 upaang kahane se  
 महाविदेहस्थ द्वादशांग सम्पन्न उपाध्यायों का इसमें  
 mahaavidehasth dvaadashaang sampann upaadhyaayo kaa isame  
 समावेश नहीं होगा एवं वर्तमान में जिन 12 उपांगों को  
 samaavesh nahee hogaa evam vartamaan me jin 12 upaango ko  
 मानने की अपनी परम्परा है, ऐरवतादि क्षेत्रों में वे  
 maanane kee apanee paramparaa hai, airavataadi kshetro me ve

jeevaajeevaabhighame, pannavanaa, jamboodeevapannattee,  
 चन्दपन्नत्ती, सूरपन्नत्ती, निरयावलियाओ,  
 chandapannattee, soorapannattee, nirayaavaliyao,  
 कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ,  
 kappavaḍinsiyao, pupphiyaao, pupphachooliyaao,  
 वण्हदसाओ।  
 vaṇhidasaaao.  
 चार मूल सूत्र- उत्तरज्झयणाइं, दसवेयालियं,  
 Chaar mool sootra - Uttarajjhayaṇaaim, dasaveyaaliyaṃ,  
 णंदी, अणुओगद्वाराइं।  
 ṇandee, aṇuogaddaaraaim.  
 चार छेद- दसासुयक्खंधो, विहकप्पो, ववहारो,  
 Chaar chhed - Dasaasuyakkhandho, vihakappo, vavahaaro,

ही और उतनी संख्या में ही उपांग हो, ऐसा कम सम्भव  
 hee aur utanee sankhyaa me hee upaang ho, aisaa kam sambhav  
 है। एतदर्थ प्राप्त एक प्राचीन ग्रंथ के श्लोक के अनुसार  
 hai. Etadrth praapt ek praacheen granth ke shlok ke anusaar  
 ये 25 गुण जानना चाहिये:- 12 अंग के जानकार, चरण सत्तरी,  
 ye 25 guṇ jaananaa chaahiye:- 12 ang ke jaanakaar, charaṇ sattaree,  
 करण सत्तरी, 8 प्रकार की प्रभावना से सम्पन्न, 3 योगों का  
 karaṇ sattaree, 8 prakaar kee prabhaavanaa se sampann, 3 yogo kaa  
 निग्रह करने वाले- 12+1+1+8+3=25  
 nigrāh karane vaale- 12+1+1+8+3=25  
 श्लोक- बारसंगविरु बुद्धा, करणचरणजुओ।  
 Shlok- Baarasangaviu buddhaa, karaṇacharaṇajuo.  
 पभावणा, जोगनिग्गहो, उवज्झायगुणं वंदे।।  
 pabhaavanaa, joganiggaho, uvajjhaayaguṇam vande.

णिसीहं और बत्तीसवां आवस्सयं तथा अनेक  
 niseeham aur batteesavaa aavassayam tathaa anek  
 ग्रंथों के जानकार सात नय, निश्चय व्यवहार,  
 grantho ke jaanakaar saat nay, nishchay vyavahaar,  
 चार प्रमाण आदि स्वमत तथा अन्य मत के  
 chaar pramaan aadi svamat tathaa anya mat ke  
 जानकार मनुष्य या देवता कोई भी विवाद  
 jaanakaar manushya yaa devataa koee bhee vivaad  
 में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पण  
 me jinako chhalane me samarth nahee, jin nahee paṇ  
 जिन सरीखे, केवली नहीं पण केवली सरीखे हैं।  
 jin sareekhe, kevalee nahee paṇ kevalee sareekhe hai.  
 अथवा- 'ग्यारह अंग से ..... केवली सरीखे हैं' तक  
 Athavaa- 'gyaarah ang se ..... kevalee sareekhe hai' tak  
 इस प्रकार भी बोला जा सकता है।  
 is prakaar bhee bolaa jaa sakataa hai.  
 ग्यारह अंग- आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग,  
 Gyaarah ang- aacharaang, sootrakritaang, sthaanaang,  
 समवायांग, व्याख्याप्रज्ञप्ति\*,  
 samavaayaang, vyaakhyaapragyapti\*,  
 ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अंतकृतदशा,  
 gyaataadharmakathaa, upaasakadashaa, antakritaddashaa,

◆ व्याख्याप्रज्ञप्ति का दूसरा नाम श्रीमद्

◆ Vyaakhyaapragyapti kaa doosaraa naam shreemad  
 भगवतीसूत्र भी है।

Bhagavateesootra bhee hai.

अनुत्तरौपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाक सूत्र।  
 anuttaraupapaatikadashaa, prashnavyaakaran, vipaak sootra.  
 बारह उपांग- औपपातिक, राजप्रश्नीय,  
 Baarah upaang- aupapaatik, raajaprashneeya,  
 जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति,  
 jeevaajeevaabhigham, pragyaapanaa, jamboodveepapragyapti,  
 चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, निरयावलिका,  
 chandrapragyapti, sooryapragyapti, nirayaavalikaa,  
 कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा।  
 kalpaavatansikaa, pushpikaa, pushpachoolikaa, vrishnidashaa.  
 चार मूल सूत्र- उत्तराध्ययन, दशवैकालिक,  
 Chaar mool sootra- uttaraadhyayan, dashavaikaalik,  
 नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार।  
 nandeesootra, anuyogadvaar.  
 चार छेद- दशाश्रुतस्कन्ध, वृहत्कल्प,  
 Chaar chhed- dashaashrutaskandh, vrihatkalp,  
 व्यवहारसूत्र, निशीथसूत्र और बत्तीसवां  
 vyavahaarasootra, niseethasootra aur batteesavaa  
 आवश्यक सूत्र तथा अनेक ग्रंथों के जानकार  
 aavashyak sootra tathaa anek grantho ke jaanakaar  
 सात नय, निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण आदि  
 saat nay, nishchay vyavahaar, chaar pramaan aadi  
 स्वमत तथा अन्य मत के जानकार मनुष्य या  
 svamat tathaa anya mat ke jaanakaar manushya yaa  
 देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में  
 devataa koee bhee vivaad me jinako chhalane me

समर्थ नहीं, जिन नहीं पण जिन सरीखें, केवली  
 samarth nahee, jin nahee pan jin sareekhe, kevalee  
 नहीं पण केवली सरीखे हैं।  
 nahee pan kevalee sareekhe hai.  
 सवैया- पढ़त इग्यारे अंग, करमों सू करे जंग,  
 Savaiyaa- Padhat igyaare ang, karamo soo kare jang,  
 पाखंडी को मानभंग, करण हुशियारी है।  
 paakhandee ko maanabhang, karan hushiyaaree hai.  
 चवदे पूरब धार, जानत आगम सार,  
 Chavade poorab dhaar, jaanat aagam saar,  
 भवियन के सुखकार, भ्रमता निवारी है।  
 bhaviyan ke sukhakaar, bhramataa nivaaree hai.  
 पढ़ावे भविकजन, स्थिर कर देत मन,  
 Padhaave bhavikajan, sthir kar det man,  
 तप कर तावे तन, ममता निवारी है।  
 tap kar taave tan, mamataa nivaaree hai.  
 कहत है तिलोकरिख, ज्ञानभानु परतिख  
 Kahat hai tilokarikh, gyaanabhaanu paratikh,  
 ऐसे उपाध्यायजी को, वन्दना हमारी है ॥4॥  
 aise upaadhyayajee ko, vandanaa hamaaree hai ॥4॥  
 ऐसे श्री उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्वरूप  
 Aise shree upaadhyayajee mahaaraaj mithyaatvaroop  
 अंधकार के मेटनहार, समकित रूप उद्योत के  
 andhakaar ke metanahaar, samakit roop uddhot ke  
 करनहार, धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर करे,  
 karanahaar, dharm se digate praanee ko sthir kare,

सारए, वारए, धारए इत्यादि अनेक गुण करके सहित हैं।  
 saarae, vaarae, dhaarae ityaadi anek gun karake sahit hai.  
 ऐसे श्री उपाध्याय जी महाराज! आपकी दिवस  
 Aise shree upaadhyay jee mahaaraaj! aapakee divas  
 सम्बन्धी अविनय आशातना की हो तो हे उपाध्याय  
 sambandhee avinay aashaatanaa kee ho to he upaadhyay  
 जी महाराज! मेरा अपराध बारम्बार क्षमा  
 jee mahaaraaj! meraa aparaadh baarambaar kshamaa  
 करिए। हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुत्तो  
 karie. Haath jod, maan mod, sheesh namaakar tikkhutto  
 के पाठ से 1008 बार वंदना नमस्कार करता हूँ  
 ke paath se 1008 baar vandanaa namaskaar karataa hoo.  
 ( यहाँ तिक्खुत्तो का पाठ बोलें ) आप मांगलिक हो, उत्तम हो,  
 ( yahaa tikkhutto kaa paath bole ) Aap maangalik ho, uttam ho,  
 हे स्वामिन्! हे नाथ! आपका इस भव, पर भव,  
 he svaamin! he naath! aapakaa is bhav, par bhav  
 भव-भव में सदा शरण होवे।  
 bhav-bhav me sada sharan hove.

## पाँचवीं भाव वन्दना

### PAANCHAVEE BHAAV VANDANAA

“णमो लोए सव्व साहूणं”- अर्थात् पाँचवें  
 "Ṇamo loe savva saahoṇam"- arthaat paanchave

पद में पृथक्त्व हजार करोड़ श्री साधुजी  
 pad me prithaktva hazaar karod shree saadhujee  
 महाराज अढ़ाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र रूप लोक में  
 mahaaraaj adhaaee dweep pandrah kshetra roop lok me  
 विचरते हैं। पाँच महाव्रत पाले, पाँच इन्द्रिय

⊕ पूर्व में यहाँ जघन्य 2 हजार करोड़, उत्कृष्ट 9 हजार करोड़  
 ⊕ Poorv me yahaa jaghanya 2 hazaar karod, utkrisht 9 hazaar karod  
 कहा जाता रहा है, किन्तु विहरमानों के वर्णन में जघन्य  
 kahaa jaata rahaa hai, kintu viharamaano ke varnan me jaghanya  
 2 हजार करोड़ साधु एवं जघन्य 2 हजार करोड़ साध्वियाँ  
 2 hazaar karod saadhu evam jaghanya 2 hazaar karod saadhviyaa  
 कही गई हैं। इस कारण पाँचवें पद की जघन्य संख्या  
 kahee gaee hai. Is kaaran paanchave pad ki jaghanya sankhyaa  
 4 हजार करोड़ हो जाती है एवं पृथक्त्व का जघन्य मान  
 4 hazaar karod ho jaatee hai evam prithaktva kaa jaghanya maan  
 2 लेकर यदि श्रीमद् भगवती सूत्र शतक 25 उद्देशक  
 2 lekar yadi shreemad Bhagavatee sootra shatak 25 uddeshak  
 6, 7 में प्रतिसेवणा कुशील के जघन्य परिमाण का योग करें  
 6, 7 me pratisevanaa kusheel ke jaghanya parimaan kaa yog kare  
 तो भी जघन्य संख्या 2600 करोड़ हो जाती है, अतः  
 to bhee jaghanya sankhyaa 2600 karod ho jaatee hai, atah  
 श्रीमद् भगवती सूत्र शतक 25 उद्देशक 6 एवं 7 में  
 shreemad Bhagavatee sootra shatak 25 uddeshak 6 evam 7 me  
 पृथक्त्व हजार करोड़ साधुओं का उल्लेख किया गया है।  
 prithaktva hazaar karod saadhuo kaa ullekh kiya gayaa hai.  
 तदनुसार यहाँ पाँचवें पद में पृथक्त्व हजार करोड़ का  
 Tadnusaar yahaa paanchave pad me prithaktva hazaar karod kaa  
 कथन कहना चाहिए।  
 kathan kahanaa chaahie.

vicharate hai. Paanch mahaavrat paale, paanch indriya  
 जीते, चार कषाय के त्यागी, भाव सच्चे, जोग सच्चे,  
 jeete, chaar kashaay ke tyagee, bhaav sachche, jog sachche,  
 करण सच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत,  
 karan sachche, kshamaavant, vairaagyavant,  
 मनसमाधारणया, वयसमाधारणया,  
 mansamaadhaaranayaa, vayasamaadhaaranayaa,  
 कायसमाधारणया, गाण संपण्णया,  
 kaayasamaadhaaranayaa, naan sampannayaa,  
 दंसण संपण्णया, चारित्त संपण्णया, \*वेयण  
 dansan sampannayaa, chaaritt sampannayaa, \*veyan  
 अहियासणया, \*मारणंतिय अहियासणया-  
 ahiyaasanayaa, maaranantiya ahiyaasanayaa-  
 इन 27 गुणों से युक्त, 5 आचार पाले, 6 काया की रक्षा  
 in 27 guno se yukt, 5 aachaar paale, 6 kaayaa kee rakshaa  
 करने वाले, 7 कुव्यसन के त्यागी, 8 मद के नाशक,  
 karane vaale, 7 kuvyasan ke tyagee, 8 mad ke naashak,  
 नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पालने वाले, 10 प्रकार  
 navavaad sahit brahmacharya paalane vaale, 10 prakaar

☆ श्रीमत् समवायांग सूत्र के 27वें समवाय में वेयण  
 ☆ Shreemat Samvaayaang sootra ke 27ve samavaaya me veyan  
 अहियासणया व मारणंतिय अहियासणया पाठ है।  
 ahiyaasanayaa va maaranantiya ahiyaasanayaa paath hai.  
 वेदनीय समाअहियासनीया मारणांतिक  
 Vedaneeya samaaahiyaasaneeyaa maaraantaik  
 समाअहियासनीया अशुद्ध है।  
 samaaahiyaasaneeyaa ashuddh hai.

के यति धर्म के धारक, 12 प्रकार की तपस्या करने  
 ke yati dharm ke dhaarak, 12 prakaar kee tapasyaa karane  
 वाले, 17 प्रकार के संयम के पालक, 18 पाप के त्यागी,  
 vaale, 17 prakaar ke sanyam ke paalak, 18 paap ke tyaagee,  
 22 परिषह को जीतने वाले, 30 महामोहनीय कर्म  
 22 parishah ko jeetane vaale, 30 mahaamohaneeya karm  
 को त्यागने वाले, 33 आशातना को टालने वाले,  
 ko tyaagane vaale, 33 aashaatanaa ko taalane vaale,  
 42 दोष त्यागकर आहार-पानी लेने वाले,  
 42 dosh tyaagakar aahaar-paanee lene vaale,  
 5 मांडला के दोष त्यागने वाले, 52 अनाचार के  
 5 maandala ke dosh tyaagane vaale, 52 anaachaar ke  
 त्यागी, तेड़िया आवे नहीं, नेतिया जीमे नहीं, सचित्त  
 tyaagee, tediyaa aave nahee, netiyaa jeeme nahee, sachitt  
 के त्यागी, अचित्त के भोगी, लोच करे, नंगे पैर चले  
 ke tyaagee, achitt ke bhogee, loch kare, nange pair chale  
 इत्यादि, काय-क्लेश करने वाले और मोह ममता रहित हैं।  
 ityaadi, kaaya klesh karane vaale aur moh mamataa rahit hai.  
 सवैया- आदरी संयम भार, करणी करे अपार,  
 Savaiyaa - Aadaree sanyam bhaar, karanee kare apaar,  
 समिति गुपति धार, विकथा निवारी है।  
 samiti gupati dhaar, vikathaa nivaaree hai.  
 जयणा करे छः काय, सावद्य न बोले वाय,  
 Jayanaa kare chhah kaay, saavaddh na bole vaay,  
 बुझाय कषाय लाय, किरिया भण्डारी है।  
 bujhaay kashaay laay, kiriyaa bhandaree hai.

ज्ञान भणे आठों याम, लेवे भगवन्त नाम,  
 Gyaan bhane aatho yaam, leve bhagavant naam,  
 धरम को करे काम, ममता कुं मारी है।  
 dharam ko kare kaam, mamataa kum maaree hai.  
 कहत है तिलोकरिख, कर्मों का टाले विख,  
 Kahat hai tilokarikh, karmo kaa taale vikh,  
 ऐसे मुनिराज ताकूं वन्दना हमारी है ॥5॥  
 aise muniraaj taakoo, vandanaa hamaaree hai ॥5॥  
 ऐसे श्री मुनिराज महाराज आपकी दिवस  
 Aise shree muniraaj mahaaraaj aapakee divas  
 सम्बन्धी अविनय आशातना की हो तो हे मुनिराज!  
 sambandhee avinay aashaatanaa kee ho to he muniraaj!  
 मेरा अपराध बारम्बार क्षमा करिए। हाथ जोड़,  
 meraa aparaadh baarambaar kshamaa karie. Haath jod  
 मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुत्तो के पाठ से  
 maan mod, sheesh namaakar tikkhutto ke paath se  
 1008 बार वन्दना नमस्कार करता हूँ। ( यहाँ  
 1008 baar vandanaa namaskaar karataa hoo. (yahaa  
 तिक्खुत्तो का पाठ बोलें ) आप मांगलिक हो, उत्तम हो  
 tikkhutto kaa paath bole) Aap maangalik ho, uttam ho,  
 हे स्वामिन्! हे नाथ। आपका इस भव, पर भव,  
 he svaamin! he naath! aapakaa is bhav, par bhav,  
 भव-भव में सदा शरण होवे।  
 bhav-bhav me sadaa sharan hove.

## दोहा

अनन्त चौबीसी जिन नमूं, सिद्ध अनन्ता क्रोड़।  
 Anant chaubeesee jin namoo, siddh anantaa kroḍ I  
 केवलज्ञानी गणधरा, वन्दूं बे कर जोड़ ॥1॥  
 kevalagyaanee gaṇadharaa, vandoo be kar joḍ I1I  
 अरिहंत सिद्ध समरूं सदा, आचारज उपाध्याय।  
 Arihant siddh samaroo sadaa, aachaaraj upaadhyaay I  
 साधु सकल के चरण को, वन्दूं शीश नमाय ॥2॥  
 saadhu sakal ke charaṇ ko, vandoo sheesh namaay I2I  
 धन साधु, धन साध्वी, धन-धन है जिनधर्म।  
 Dhan saadhu, dhan saadhvee, dhan-dhan hai jinadharm  
 ये समरयां पातक झरें, टूटे आठों कर्म ॥3॥  
 ye samarayaa paatak jhare, toote aatho karm I3I  
 शासननायक सुमरिये, भगवन्त वीर जिणंद।  
 Shaasananaayak sumariye, bhagavant veer jinand I  
 अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥4॥  
 aliya vighan doore hare, aape paramaanand I4I  
 अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।  
 Angooṭhe amrit base, labdhi taṇaa bhaṇḍaar I  
 श्री गुरु गौतम सुमरिये, वंछित फल दातार ॥5॥  
 shree Guru Gautam sumariye, vanchhit phal daataar I5I  
 लोभी गुरु तारे नहीं, तिरे सो तारण हार।  
 Lobhee guru taare nahee, tire so taaraṇ haar I  
 जो तूं तिरियो चाहे तो, निर्लोभी गुरु धार ॥6॥  
 jo too tiriyo chaahē to, nirlobhee guru dhaar I6I  
 पर उपकारी साधुजी, तारण तरण जहाज।

Par upakaaree saadhujee, taaraṇ taraṇ jahaaj I  
 कर जोड़ी हूं नित नमूं, धन मोटा मुनिराज ॥7॥  
 kar joḍee hoo nit namoo, dhan moṭaa muniraaj I7I  
 साधु सती ने सूरमा, ज्ञानी ने गजदन्त।  
 Saadhu satee ne sooramaa, gyaanee ne gajadant I  
 इतना पीछा ना हटे, जो जुग जाय अनन्त ॥8॥  
 itanaa peechhaa naa haṭe, jo jug jaay anant I8I  
 गुरु दीपक गुरु चांदणो, गुरु बिन घोर अंधार।  
 Guru deepak guru chaandaṇo, guru bin ghor andhaar I  
 पलक न विसरूं तुम भणी, गुरु मुझ प्राण आधार ॥9॥  
 palak na visaroo tum bhaneē, guru mujh praaṇ aadhaar I9I

## 17. आयरिय उवज्झाए का पाठ

### 17. AAYARIYA UVAJJHAAE KAA PAATH

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे या।  
 Aayariya-uvajjhaae, seese saahammie kulagane ya I  
 जे मे केई कसाया, सव्वे तिविहेणं खामेमि ॥1॥  
 je me keee kasaayaa, savve tivihenaṇam khaamemi I1I  
 सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे।  
 Savvass samaṇasanghass, bhagavao anjali karia seese I  
 सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥2॥  
 savvam khamaavaittaa, khamaami savvass ahayam pi I2I  
 सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियनियचित्तो।  
 Savvass jeevaraasiss, bhaavao dhammanihiyaniyachitto I  
 सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥3॥



savvam khamaavaittaa, khamaami savvass ahayam pi I|3||  
 रागेण व दोसेण व, अहवा अकयण्णुणा पडिनिवसेणां।  
 Raagen va dosen va, ahavaa akayannunaa paḍinivesenam I  
 जं मे किंचि वि भणिअं, तमहं तिविहेणं खामेमि I|4||  
 jam me kinchi vi bhaṇiam, tamaham tivihenam khaamemi I|4||

## 18. अढ़ाई द्वीप का पाठ

### 18. ADHAAEE DVEEP KAA PAAṬH

अढ़ाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र तथा अढ़ाई द्वीप  
 Adhaaee dveep pandrah kshetra tathaa aḍhaaee dveep  
 के बाहर असंख्यात द्वीप समुद्रों में\* श्रावक-  
 ke baahar asankhyaat dveep samudro me\* shraavak-  
 श्राविकाएँ दान देवे, शील पाले, तपस्या करे,  
 shraavikaae daan deve, sheel paale, tapasyaa kare,  
 शुभ भावना भावे, संवर करे, सामायिक करे,  
 shubh bhaavanaa bhaave, samvar kare, saamaayik kare,  
 पौषध करे, प्रतिक्रमण करे, तीन मनोरथ चिंतवे,  
 paushadh kare, pratikramaṇ kare, teen manorath chintave,  
 चौदह नियम चितारे, जीवादिक नव पदार्थ जाने,  
 chaudah niyam chitaare, jeevaadik nav padaarth jaane,

★ तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय श्रावक अढ़ाई द्वीप के बाहर द्वीप  
 ★ Tiryanch panchendriya shraavak aḍhaaee dveep ke baahar dveep  
 समुद्रों में भी सम्भव है। अतः इस पाठ में उन्हें भी  
 samudro me bhee sambhav hai. Atah is paath me unhe bhee  
 ग्रहण किया है।  
 grahaṇ kiyaa hai.

श्रावक के इक्कीस गुण करके युक्त, एक व्रतधारी,  
 shraavak ke ikkees guṇ karake yukt, ek vratadhaaree,  
 जाव बारह व्रतधारी जो भगवन् की आज्ञा में  
 jaav baarah vratadhaaree jo bhagavan kee aagyaa me  
 विचरे, ऐसे बड़ों से हाथ जोड़कर, पैर पड़कर क्षमा  
 vichare, aise baḍo se haath joḍakar, pair paḍakar kshamaa  
 मांगता हूँ, आप क्षमा करें, आप क्षमा करने  
 maangataa hoo, aap kshamaa kare, aap kshamaa karane  
 योग्य हैं और छोटों से समुच्चय खमाता हूँ।  
 yogya hai aur chhoṭo se samuchchay khamaataa hoo.

## 19. चौरासी लाख जीवयोनि का पाठ

### 19. CHAURAASEE LAAKHJEEVAYONIKAAPAAṬH

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख  
 Saat laakh prithveekaay, saat laakh apkaay, saat laakh  
 तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दस लाख प्रत्येक  
 teukaay, saat laakh vaayukaay, das laakh pratyek  
 वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण  
 vanaspatikaay, chaudah laakh saadhaaran  
 वनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय,  
 vanaspatikaay, do laakh beindriya, do laakh teindriya,  
 दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख  
 do laakh chaurindriya, chaar laakh devataa, chaar laakh  
 नैरयिक, चार लाख तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, चौदह लाख  
 nairayik, chaar laakh tiryanch panchendriya, chaudah laakh



मनुष्य- ऐसे चार गति में चौरासी लाख  
 manushya- aise chaar gati me chauraasee laakh  
 जीवयोनि के सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त  
 jeevayoni ke sookshm, baadar, paryaaapt, aparyaaapt  
 जीवों में से किसी जीव का हिलते, चलते, उठते,  
 jeevo me se kisee jeev kaa hilate, chalate, uthate,  
 बैठते, सोते, जागते हनन किया हो, कराया हो,  
 baithate, sote, jaagate hanan kiyaa ho, karaayaa ho,  
 करते हुए का अनुमोदन किया हो, छेदा हो, भेदा हो,  
 karate hue kaa anumodan kiyaa ho, chhedaa ho, bhedaa ho,  
 किलामणा उपजाई हो तो मन, वचन, काया से  
 kilaamaṇaa upajaaee ho to man, vachan, kaayaa se,  
 दिवस सम्बन्धी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं<sup>□</sup>  
 divas sambandhee tassa michchhaa mi dukkaḍam.<sup>□</sup>

□ जीव के 563 भेदों को अभिहया, वक्तिया आदि 10 के साथ गुणा  
 □ Jeev ke 563 bhedo ko abhihayaa, vattiyaa aadi 10 ke saath guṇaa  
 करने से 5630, फिर उनको राग-द्वेष से गुणा करने से 11260  
 karane se 5630, phir unako raag-dvesh se guṇaa karane se 11260  
 भेद बनते हैं इत्यादि आगे की प्रक्रिया से निर्मित 1824120 प्रकारों  
 bhed banate hai ityaadi aage kee prakriyaa se nirmat 1824120 prakaaro  
 से पूर्व में इस पाठ में मिच्छा मि दुक्कडं दिया जाता  
 se poorv me is paath me michchhaa mi dukkaḍam diyaa jaataa  
 रहा है, 563 भेदों में सूक्ष्म जीवों का भी समावेश है,  
 rahaa hai, 563 bhedo me sookshm jeevo kaa bhee samaavesh hai,  
 उन जीवों की अभिहया, वक्तिया आदि प्रकारों से एवं त्रियोगों  
 un jeevo kee abhihayaa, vattiyaa aadi prakaaro se evam triyogo  
 में काया से साक्षात् हिंसा संभव न होने से 1824120  
 me kaayaa se saakshaat hinsaa sambhav na hone se 1824120

## 20. खामेमि सव्व जीवे का पाठ

### 20. KHAAMEMI SAVVA JEEVE KAA PAATH

खामेमि सव्वजीवे\*, सव्वे जीवा खमंतु मे।  
 Khaamemi savvajeeve\*, savve jeevaa khamantu me.  
 मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ॥  
 mittee me savvabhooesu, veram majjham na keṇai.  
 एवमहं आलोइय, निंदिय गरहिय दुगुच्छिउं\* सम्मं।  
 Evamaham aalooya, nindiya garahiya dugunchhiuṃ\* sammam.  
 तिविहेणं पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं॥  
 tivihēṇam paḍikkanto, vandaami jiṇe chauvveesam.

भेद नहीं बनते हैं, अतः पूर्ण संगति न होने से इस पाठ  
 bhed nahee banate hai, atah poorṇ sangati na hone se is paath  
 से हटाया गया है।  
 se hataayaa gayaa hai.

\* पूर्व में यहाँ 'सव्वे जीवा' बोला जाता था लेकिन  
 \* Poorv me yahaa 'savve jeevaa' bolaa jaataa thaa lekin  
 आवश्यकचूर्णि आदि प्राचीन ग्रंथों में इस गाथा में  
 aavashyakachoorṇi aadi praacheen grantho me is gaathaa me  
 'सव्वजीवे' पाठ उपलब्ध होने से तदनुसार यहाँ शुद्ध  
 'savvajeeve' paath upalabdh hone se tadanusaar yahaa shuddh  
 पाठ रखा गया है।  
 paath rakhaa gayaa hai.  
 \* दुगुच्छियं के स्थान पर यह शुद्ध पाठ है।  
 \* Duganchhiyam ke sthaan par yah shuddh paath hai.

## 21. प्रायश्चित का पाठ

### 21. PRAAYASHCHIT KAA PAATH

इच्छामि णं भंते तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए  
 Ichchhaami nam bhante tubbhehim abbhanunnaae  
 समाणे देवसियं पायच्छित्त विसोहणत्थं  
 samaane devasiya paayachchhitt visohanatttham  
 करेमि काउस्सगं।  
 karemi kaaussaggam.

## 22. समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ

### 21. SAMUCHCHAYA PACHCHAKKHAAN KAA PAATH

गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं  
 Ganthisahiyam, mutthisahiyam, namukkaarasahiyam,  
 पोरिसियं साद्ध पोरिसियं, तिविहंपि चउविहंपि  
 porisiyam, saaddh porisiyam, tivihampi, chauvihampi  
 आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं,  
 aahaaram, asanam, paanam, khaaimam, saaimam,  
 ( अपनी-अपनी धारणा के अनुसार )  
 (apanee-apanee dhaaraana ke anusar)

❖ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइय', पक्खी प्रतिक्रमण में  
 ❖ Raatrik pratikraman me 'raaiya', pakkhee pratikraman me  
 'पक्खिय', चौमासी प्रतिक्रमण में 'चाउम्मासिय',  
 'pakkhiya', chaumaasee pratikraman me 'chaaummaasiya',  
 सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरिय', बोलना चाहिए।  
 saanvatsarik pratikraman me 'samvachchhariya' bolanaa chaahie.

अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,  
 annatthanaabhogenam, sahasaagaarenam,  
 महत्तरागारेणं, सब्ब समाहिवत्तियागारेणं  
 mahattaraagaarenam, savva samaahivattiyaagaarenam  
 वोसिरामि\*।  
 vosiraami\*.

## 23. अन्तिम पाठ

### 23. ANTIM PAATH

सामायिक एक, चउवीसत्थय दो, वन्दनां तीन,  
 Saamaayik ek, chauveesatthaya do, vandanaa teen,  
 प्रतिक्रमण चार, कायोत्सर्ग पाँच, पच्चक्खाण  
 pratikraman chaar, kaayotsarg paanch, pachchakkaan  
 छः- ये छः आवश्यक सम्पूर्ण हुए।  
 chhah- ye chhah aavashyak sampoom hue.  
 छः आवश्यकों में जानते-अजानते जो कोई आतिचार  
 Chhah aavashyako me jaanate-ajaanate jo kooee atichaar  
 दोष लगा हो, प्रतिक्रमण अविधि से किया हो,  
 dosh lagaa ho, pratikraman avidhi se kiyaa ho,  
 सूत्र विपरित किया हो, पाठ उच्चारण करते समय  
 sootra viparit kiyaa ho, paath uchchaaran karate samay  
 काना, मात्रा अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ

\* स्वयं पच्चक्खाण करना हो या दूसरों को

\* Svayam pachchakkaan karanaa ho yaa doosaro ko  
 karavana ho dono sthiti me vosiraami hee bole.

karavaanaa ho dono sthiti me vosiraami hee bole.

kaanaa, maatraa, anusvaar, pad, akshar hrisv, deergh  
 न्यूनाधिक आगे-पीछे कहा हो तो<sup>+</sup> तस्स  
 nyoonaadhik aage-peechee kahaa ho to<sup>+</sup> tassa  
 मिच्छा मि दुक्कडं।  
 michchhaa mi dukkaḍam.

मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अव्रत का प्रतिक्रमण,  
 Mithyaatva kaa pratikramaṇ, avrat kaa pratikramaṇ,  
 प्रमाद का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण,  
 pramaad kaa pratikramaṇ, kashaay kaa pratikramaṇ,

---

✦ अंतिम पाठ का उच्चारण प्रतिक्रमण की विधि में हुई  
 ✦ Antim paath kaa uchchaaraṇ pratikramaṇ kee vidhi me huee  
 भूलों की शुद्धि के लिए एवं कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ  
 bhoolo kee shuddhi ke lie evam kaayotsarg shuddhi kaa paath  
 कायोत्सर्गांतर्गत दोषों के परिहारार्थ है। प्रतिक्रमण के  
 kaayotsargaantargat dosho ke parihaaraarth hai. Pratikramaṇ ke  
 अन्य पाठों से सम्पूर्ण दिवस, रात्रि में व्रतों में लगे दोषों  
 anya paatho se sampoorṇ divas, raatri me vrato me lage dosho  
 की शुद्धि की जाती है, इसलिए वहाँ यथावसर दिवस  
 kee shuddhi kee jaatee hai, isalie vaha yathaavasara divas  
 संबंधी, रात्रि संबंधी आदि बोला जाता है लेकिन इन  
 sambandhee, raatree sambandhee aadi bolaa jaataa hai lekin in  
 पाठों का दिवस से, रात्रि से वैसा कोई संबंध न होने से  
 paatho kaa divas se, raatri se vaisaa koe sambandh na hone se  
 इन पाठों में दिवस, रात्रि संबंधी न बोलकर केवल तस्स  
 in paatho me divas, raatri sambandhee na bolakar keval tassa  
 मिच्छा मि दुक्कडं देना चाहिए।  
 michchhaa mi dukkaḍam denaa chaahie.

अशुभ योग का प्रतिक्रमण- इन पाँच प्रतिक्रमणों  
 ashubh yog kaa pratikramaṇ- in paanch pratikramaṇo  
 में से कोई प्रतिक्रमण न किया हो, चलते-फिरते,  
 me se koe pratikramaṇ na kiya ho, chalate-phirate,  
 उठते-बैठते, पढ़ते-गुणते, जानते-अजानते  
 uthate-baithate, padhate-gunate, jaanate-ajaanate,  
 ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप सम्बन्धी कोई अतिचार  
 gyaan, darshan, chaaritra, tap sambandhee koe atichaar  
 दोष लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।  
 dosh lagaa ho to tassa michchhaa mi dukkaḍam.

गये काल का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल का संवर\*,  
 Gaye kaal kaa pratikramaṇ, vartamaan kaal kaa samvar\*,

---

\* सामायिक हो, संवर हो या पौषध हो, इस पाठ में  
 \* Saamaayik ho, samvar ho yaa paushadh ho, is paath me  
 'वर्तमान काल का संवर' ही बोलना चाहिए। सामायिक  
 'vartamaan kaal kaa samvar' hee bolanaa chaahie. Saamaayik  
 और पौषध भी एक प्रकार का संवर ही है। श्रीमद्  
 aur paushadh bhee ek prakaar kaa samvar hee hai. Shreemad  
 भगवतीसूत्र में 'अतीतं पडिक्कमइ, पडुप्पन्नं  
 Bhagavateesootra me 'ateetam padikkamai, paduppannam  
 संवरेइ' पाठ है। 'पडुप्पन्नं संवरेइ' का तात्पर्य  
 samvarei' paath hai. 'Paduppannam samvarei' kaa taatparya  
 वर्तमान काल का संवर है। इसलिए आगमिक वर्णन को  
 vartamaan kaal kaa samvar hai. Isalie aagamik varṇan ko  
 प्रधानता देते हुए यह पाठ रखा गया है।  
 pradhaanataa dete hue yah paath rakhaa gayaa hai.

भविष्यकाल ( आगामीकाल ) का पच्यक्खाण इनके  
bhavishyakaal (aagaameekaal) kaa pachchakkhaan inake  
विषय में जो कोई अतिचार दोष लगा हो तो तस्स  
vishay me jo koe atichaar dosh lagaa ho to tassa  
मिच्छा मि दुक्कडं।  
michchhaa mi dukkaḍam.

सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा, आस्था- ये व्यवहार  
Sam, samveg, nirved, anukampaa, aasthaa- ye vyavahaar  
समकित के पाँच लक्षण हैं। इनको मैं धारण करता  
samakit ke paanch lakshan hai. Inako mai dhaaran karataa  
हूँ। देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ ( आचार्य श्री पूज्य  
hoo. Dev arihant, guru nirgranth ( Aachaarya shree poojya  
श्री 1008 श्री रामलालजी म. सा. ) केवलीभाषित  
Shree 1008 Shree Raamalaalajee ma.saa.) kevaleebhaashit  
दयामय धर्म- ये तीन तत्त्व सार हैं, संसार असार है।  
dayaamay dharm- ye teen tattva saar hai. sansaar asaar hai.  
भगवन्त महाराज आपका मार्ग सच्चं  
Bhagavant maharaaj aapakaa maarg sachcham  
सच्चं थव थुई मंगलं।  
sachcham thava thuee mangalam.

॥ प्रतिक्रमण सूत्र समाप्त॥

॥ Pratikraman sootra samaapt ॥

## प्रतिक्रमण की विधि PRATIKRAMAN KEE VIDHI

चउवीसत्थय

Chauveesatthaya

1. स्थानक में म.सा. विराजमान हों तो उन्हें  
1. Sthaanak me ma.saa. viraajamaan ho to unhe  
तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करें।  
tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa kare.  
यदि म.सा. विराजमान न हों तो पूर्व या उत्तर  
Yadi ma.saa. viraajamaan na ho to poorv yaa uttar  
दिशा की ओर मुँह करके तीन बार वंदना करें।  
dishaa kee aur muh karake teen baar vandanaa kare.  
आचार्य भगवन्..... ( अपने-अपने धर्माचार्य  
Aachaarya bhagavan.... ( apane-apane dharmachaarya  
जी का नाम लेना ) की अनुज्ञा लेकर चउवीसत्थय  
jee kaa naam lenaa) kee anugyaa lekar chauveesatthaya  
करें। यथा- आचार्य प्रवर पूज्य 1008 श्री  
kare. Yathaa- Aachaarya pravar poojya 1008 Shree  
रामलालजी म.सा. की अनुज्ञा से दैवसिक  
Raamalaalajee ma.saa. kee anugyaa se daivasik  
प्रतिक्रमण एवं चउवीसत्थय करता हूँ/करते हैं।  
pratikraman evam chauveesatthaya karataa hoo/karate hai.
2. चउवीसत्थय में नवकार मंत्र, इच्छाकारेणं,  
2. Chauveesatthaya me navakaar mantra, ichchhaakaarenam,  
तस्सउत्तरी का पाठ कहकर कायोत्सर्ग ( पूर्व  
tassauttaree kaa paath kahakar kaayotsarg ( poorv

विधि अनुसार ) करें।

vidhi aunsaar) kare.

3. कायोत्सर्ग में दो लोगस्स मन में कहें तथा

3. Kaayotsarg me do logass man me kahe tathaa

“णमो अरिहंताणं” कहकर कायोत्सर्ग पारें।

"namo arihantaanam" kahakar kaayotsarg paare.

4. फिर नवकार मंत्र और कायोत्सर्ग शुद्धि का

4. Phir navakaar mantra aur kaayotsarg shuddhi kaa

पाठ कहें और एक लोगस्स प्रकट बोलें।

paath kahe aur ek logass prakat bole.

5. आसन छोड़कर बायां घुटना खड़ा करके दो

5. Aasan chhodakar baayaa ghutanaa khadaa karake do

णमोत्थु णं ( पूर्व विधि अनुसार ) बोलें। दूसरे

namotthu nam (poorv vidhi anusaar) bole. Doosare

णमोत्थु णं में “संपताणं” के स्थान पर

namotthu nam me "sompataanam" ke sthaan par

“संपाविउकामाणं” कहें।

"sampaaviukaamaanam" kahe.

6. दो णमोत्थु णं के बाद “धर्मगुरु-धर्माचार्य”

6. Do namotthu nam ke baad "dharmaguru-dharmaacharya"

का स्तुति पाठ कहें- णमोत्थु णं रामस्स गणिवरस्स

kaa stuti paath kahe - namotthu nam raamass ganivarass

मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स कहें।

mam dhammaayariyass dhammovaesagass kahe.

प्रतिक्रमण करने की अनुज्ञा-

**Pratikraman karane kee anugyaa-**

खड़े होकर तीन बार तिक्खुत्तो के पाठ से वंदना

khade hokar teen baar tikkhutto ke paath se vandanaa

करके इच्छामि णं भंते का पाठ बोलें।

karake ichchhaami nam bhante kaa paath bole.

पहला सामायिक आवश्यक

**Pahalaa saamaayik aavashyak**

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके

Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake

“सामायिक आवश्यक” की अनुज्ञा लें- ( खड़े होकर )

"saamaayik aavashyak" kee anugyaa le- (khade hokar)

1. नवकार मंत्र

1. Navakaar mantra

2. करेमि भंते

2. Karemi bhante

3. इच्छामि ठाइउं

3. Ichchhaami thaaium

4. तस्स उत्तरी का पाठ बोलकर 99 अतिचार का ध्यान करें।

4. Tassa uttaree kaa paath bolakar 99 atichaar kaa dhyaan kare.

5. कायोत्सर्ग में 99 अतिचार ( आगमे तिविहे से छोटी

5. Kaayotsarg me 99 atichaar (aagame tivihe se chhotee

संलेखना तक ) और 18 पापस्थान का चिंतन करें

sanlekhanaa tak) aur 18 paapasthaan kaa chintan kare

तथा पाठों में जहाँ-जहाँ “तस्स मिच्छा मि

tathaa paatho me jahaa-jahaa "tassaa michchhaa mi dukkadam" aae vahaa-vahaa kaayotsarg me "तस्स आलोउं" बोलना चाहिए। णमो अरिहंताणं "tassa aaloum" bolanaa chaahie. Namō arihantaanam कहकर कायोत्सर्ग पारें। फिर-  
kahakar kaayotsarg paare. Phir

6. नवकार मंत्र
6. Navakaar mantra
7. कायोत्सर्ग शुद्धि ( ध्यान पारने ) का पाठ बोलें।
7. Kaayotsarg shuddhi (dhyaan paarane) kaa paath bole.

### दूसरा चउवीसत्थय आवश्यक

#### Doosaraa chauveesatthaya aavashyak

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके  
Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake  
"चउवीसत्थय आवश्यक" की अनुज्ञा लें- ( खड़े होकर )  
"chauveesatthaya aavashyak" kee anugyaa le- (khaḍe hokar)  
1. लोगस का पाठ बोलें।  
1. Logass kaa paath bole.

### तीसरा वंदना आवश्यक

#### Teesaraa vandanaa aavashyak

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके  
Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake  
"वंदना आवश्यक" की अनुज्ञा लें। फिर-

"vandanaa aavashyak" kee augyaa le. Phir-

1. दो बार विधिपूर्वक इच्छामि खमासमणो का पाठ बोलें।
1. do baar vidhipoorvak ichchhaami khamaasamaṇo kaa paath bole.

### चौथा प्रतिक्रमण आवश्यक

#### Chauthaa pratikraman aavashyak

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके  
Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake  
"प्रतिक्रमण आवश्यक" की अनुज्ञा लें- ( खड़े होकर )  
"pratikraman aavashyak" kee anugyaa le- (khaḍe hokar)  
1. कायोत्सर्ग में कहे हुए सभी पाठ  
1. Kaayotsarg me kahe hue sabhee paath  
( 99 अतिचार के पाठ, समुच्चय पाठ,  
(99 atichaar ke paath, samuchchay paath  
18 पापस्थान का पाठ ) प्रगट बोलें। फिर-  
18 paapasthaan kaa paath) pragat bole. Phir-  
2. तस्स सव्वस्स का पाठ बोलें।  
2. Tassa savvassa kaa paath bole.  
तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके  
Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake  
"श्रावक सूत्र" की अनुज्ञा लें। श्रावक सूत्र में  
"shraavak sootra" kee anugyaa le. Shraavak sootra me  
( दाहिना घुटना ऊँचा करके )-  
(daahinaa ghutanaa oonchaa karake)-

3. नवकार मंत्र
3. Navakaar mantra
4. करेमि भंते
4. Karemi bhante
5. चत्तारि मंगल का पाठ ( खड़े होकर )।
5. Chattaari mangalam kaa paath (khaḍe hokar).
- फिर दाहिना घुटना ऊँचा करके
- Phir daahinaa ghutaṇanaa oonchaa karake
6. इच्छामि पडिक्कमिउं
6. Ichchhaami paḍikkamium
7. इच्छाकारेणं
7. Ichchhaakaareṇam
8. आगमे तिविहे
8. Aagame tivihe
9. दंसण समकित
9. Dansaṇ samakit
10. बारह व्रतों के अतिचार सहित पाठ बोलें।
10. Baarah vrato ke atichaar sahit paath bole.
- फिर पालथी आसन में बैठकर-
- Phir paalathee aasan me baiṭhakar-
11. बड़ी संलेखना
11. Baḍee sanlekhanaa
12. फिर खड़े होकर, तस्स धम्मस्स का पाठ
12. Phir khaḍe hokar, tassa dhammassa kaa paath
13. दो बार विधिपूर्वक "इच्छामि खमासमाणो"
13. Do baar vidhipoorvak "ichchhaami khamaasamaṇo"

का पाठ बोलें।

kaa paath bole.

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके

Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake

“पाँच पदों की भाव वंदना” करने की अनुज्ञा लें।

"paanch pado kee bhaav vandanaa" karane kee anugyaa le.

भाव वंदन देने की विधि-

**Bhaav vandan dene kee vidhi-**

आसन से वज्रासन में बैठकर, दोनों कुहनियों को

Aasan se vajraasan me baiṭhakar, dono kuhaniyo ko

घुटनों पर टिकाकर, हाथ जोड़ मस्तक पर लगाकर

ghutaṇano par tikaakar, haath joḍ mastak par lagaakar

भाव वंदना का पाठ बोलना चाहिए।

bhaav vandanaa kaa paath bolanaa chaahie.

14. नवकार मंत्र

14. Navakaar mantra

15. पाँच पदों की भाव वंदना ( विधि पूर्वक ) बोलें।

15. Paanch pado kee bhaav vandanaa (vidhi poorvak) bole.

फिर पालथी आसन में बैठकर-

Phir paalathee aasan me baiṭhakar-

16. अनन्त चौबीसी आदि दोहे

16. Anant chaubeesee aadi dohe

17. आयरिय उवज्झाए का पाठ

17. Aayariya uvajjhaae kaa paath

18. अढ़ाई द्वीप का पाठ



18. Adhaaee dweep kaa paath
19. चौरासी लाख जीवयोनि का पाठ
19. Chauraasee laakh jeevayoni kaa paath
20. खामेमि सब्ब जीवे का पाठ
20. khaamemi savva jeeve kaa paath
21. अठारह पापस्थान का पाठ बोलें।
21. Athaarah paapasthaan kaa paath bole.

### पाँचवां 'कायोत्सर्ग' आवश्यक-

#### Paanchavaa 'kaayotsarg' aavashyak-

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके

Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake

कायोत्सर्ग आवश्यक की अनुज्ञा लें- (खड़े होकर)

kaayotsarg aavashyak kee anugyaa le- (khaḍe hokar)

1. प्रायश्चित का पाठ
1. Praayashchit kaa paath
2. नवकार मंत्र
2. Navakaar mantra
3. करेमि भंते
3. Karemi bhante
4. इच्छामि ठाइउं
4. Ichchhaami thaaium
5. तस्स उत्तरी का पाठ बोलकर कायोत्सर्ग करें
5. Tassa uttaree kaa paath bolakar kaayotsarg kare
6. कायोत्सर्ग में देवसिय, राइय प्रतिक्रमण में 4
6. Kaayotsarg me devasiya, raaiya pratikramaṇ me 4

लोगस्स का, पक्खी प्रतिक्रमण में 8 लोगस्स का,  
logass kaa, pakkhee pratikramaṇ me 8 logass kaa,  
चौमासी प्रतिक्रमण में 12 लोगस्स का और  
chaumaasee pratikramaṇ me 12 logass kaa aur  
संवत्सरी प्रतिक्रमण में 20 लोगस्स का ध्यान करें।  
sanvatsaree pratikramaṇ me 20 logass kaa dhyaan kare.

'णमो अरिहंताणं' कहकर कायोत्सर्ग पारें। फिर-

'ṇamo arihantaṇam' kahakar kaayotsarg paare. Phir-

7. नवकार मंत्र

7. Navakaar mantra

8. कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ

8. Kaayotsarg shuddhi kaa paath

9. एक लोगस्स प्रगट बोलें

9. Ek logass pragat bole

10. दो बार विधिपूर्वक 'इच्छामि खमासमणो'

10. Do baar vidhipoorvak 'ichchhaami khamaasamaṇo'

का पाठ बोलें।

kaa paath bole.

### छठा पच्चक्खाण आवश्यक-

#### Chhathaa pachchakhaaṇ aavashyak-

तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके

Tikkhutto ke paath se teen baar vandanaa karake

पच्चक्खाण आवश्यक की अनुज्ञा लें- (खड़े होकर)

pachchakhaaṇ aavashyak kee anugyaa le- (khaḍe hokar)

1. साधु महाराज से शक्ति अनुसार पच्चक्खाण

1. Saadhu mahaaraaj se shakti anusaar pachchakkhaan करें। यदि साधु महाराज नहीं विराजते हों तो बड़े  
kare. Yadi saadhu mahaaraaj nahee viraajate ho to baḍe  
श्रावकजी से पच्चक्खाण करें। यदि वे भी नहीं  
shraavakajee se pachchakkhaan kare. Yadi ve bhee nahee  
हों तो स्वयं 'समुच्चय पच्चक्खाण' के पाठ से  
ho to svayam 'samuchchaya pachchakkhaan ke paaṭh se  
पच्चक्खाण करें। अंतिम पाठ बोलकर नीचे बैठें  
pachchakkhaan kare. Antim paaṭh bolakar neeche baiṭhe  
और बायाँ घुटना खड़ा करके उपर्युक्त विधि से-  
aur baayaa ghuṭanaa khaḍaa karake uparyukt vidhi se-
2. दो बार णमोत्थुणं तथा  
2. Do baar ṇamotthunam tathaa
3. धर्मगुरु-धर्माचार्य का स्तुति पाठ बोलें-  
3. Dharmaguru-dharmaachaarya kaa stuti paaṭh bole-  
णमोत्थु णं रामस्स गणिवरस्स मम  
ṇamotthu ṇam raamassa gaṇivarassa mam  
धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स।  
dhammaayariyassa dhammovaesagassa.
4. तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वंदना करके  
4. Tikkhutto ke paaṭh se teen baar vandanaa karake  
स्वधर्मी भाइयों को खमावें। बाद में चौबीसी,  
svadharmee bhaaiyo ko khamaave. Baad me chaubeesee,  
स्तवन आदि बोलें।  
stavan aadi bole.

-----XXXXX-----